# प्रेम पत्र

**पुज्य जय प्रकाश नारायण जी,**

**सादर प्रणाम।**

लोकनायक होने के नाते मैं आपकी इज्जत करता हूँ। लेकिन उससे भी ज्यादा इस बात के लिये आपकी इज्जत करता हूँ क्योंकि आप जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुँच गये हैं जहाँ से दोनों लोकों के दर्शन आप एक साथ कर सकते हैं।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि संकट पड़ने पर सब महारथी मंत्रियों को पटना की याद आई। ये वे ही लोग हैं जो कि सोचते थे कि लोकनायक अब बूढ़े हो गये हैं और बहुत बीमार रहते हैं। इनके अखबार भी यह लिखते थे कि एक सप्ताह में केवल दो दिन जे० पी० के दिमाग का संतुलन ठीक रहता है। इसलिये न तो आपके वचन और न ही आपके अखबार वालों को दिये हुए इन्टरव्यू कोई खास महत्व रखते हैं।

कुछ लोगों का कहना यह भी है कि अब जनता पार्टी को आपकी जरूरत नहीं है। यह भी सुनने में आया है कि श्री राजनारायण ने आपसे शिकायत की है कि पहले जब मैं स्टेटमेंट देता था तो चन्द्रशेखर उसको सीरयसली (महत्व) नहीं देते थे, अब जब मैं स्टेटमेंट देता हूँ तो सीरयसली क्यों ले रहे हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि राजनारायण और चन्द्रशेखर नहीं लड़ रहे हैं बल्कि मुर्गों की तरह लड़ाये जा रहे हैं। उनके पीछे बैठे चरणसिंह और मोरारजी भाई तार खींच कर अपनी ताकत आजमा रहे हैं।

इस समय यदि आप समझते हैं कि जनता पार्टी को बचाना देश के हित में है तो आप स्वयं प्रधान मंत्री का पद संभालें और मुर्गों को न लड़ने दें।

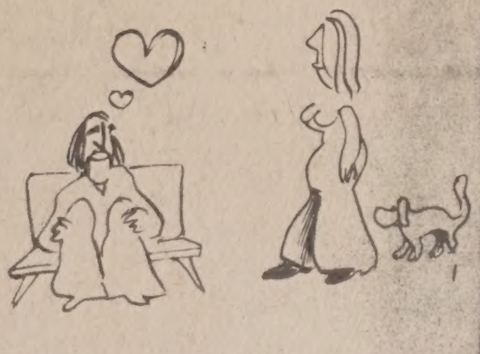
आपका

चिल्ली



## मुख्य पृष्ठ पर

चिल्ली खेलों का सरताज
देखने लायक शो है आज,
कठिन पराजित करना इसको
नहीं समझता बाल वाल को,
जो भी आये टांग अड़ाने
क्या होगा भगवान ही जाने।






दीवाना

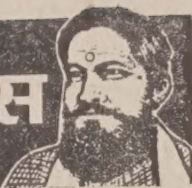
अंक २३, ६ जुलाई से १२ जुलाई/१९७८ तक

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से
निवेदन है कि वह हमें हा... पत्र अप्रकाशित लघु कथायें ... पर प्रकाशित कथा पर 15 रु० ... मिक दिया जायेगा। रच... ति/अस्वीकृति की सू... प्रयोग डाक टिकट लगा ... लिफाफा

# काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

**सतीस कसेरा, अबोहर**

प्र० : अपने जमाई को दहेज में क्या देना चाहिए ?

उ० : नहिं दहेज में दे सके उसको मोटरकार।
एक पैण्ट, बुश्शर्ट दो, जूते चप्पल चार ॥

**अनादि चक्रधर, नई दिल्ली**

प्र० : यदि आप मंच पर कविता पढ़ रहे हों और चक्रवात (बवंडर) आ जाय तो ?

उ० : ऐसा शुभ अवसर मिले, काका लाभ उठायं।
पत्र पुष्प सब कविन के, लेकर के उड़ जायं ॥

**अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी, विक्रमगंज**

प्र० : काकाजी, आपने जवानी में किसी को लव लैटर लिखे थे क्या ?

उ० : शीघ्र छपेंगे लिखे जो, हमने लव लैटर्र।
पढ़-पढ़ कर तुम हंसोगे, मजेदार मैटर्र ॥

**दीपक कुमार सिनहा, सहरसा (बिहार)**

प्र० : कभी आप किसी से कुश्ती लड़े हैं क्या ?

उ० : कुश्ती लड़ने के लिए, हमने ठोकी ताल।
भाग गए मैदान से, मक्खी-मच्छर लाल ॥

**दीपक जार्ज डिक्रुज, भागलपुर**

प्र० : दीवाना पढ़ने वाले आठ साल के बच्चों और साठ साल के बच्चों में क्या फर्क है ?

उ० : आठ साल वाले करें ऊटपटांग सवाल।
साठ साल वाले उन्हें, उत्तर दें तत्काल ॥

**रणजीत सिंह जामिया मिलिया, नई दिल्ली**

प्र० : दिल्ली में दीवारों पर लिखा हुआ है, 'शाह आयोग नाटक है,' आपका क्या ख्याल है ?

उ० : मसजिद नाटक, मंदर नाटक, संसद के भी अन्दर नाटक।
नाटक है यह सारी दुनिया, खेल रहे हैं बन्दर नाटक ॥

**आवेश कुमार जैन, मेरठ कैन्ट**

प्र० : काकी के हाथ के रसगुल्ले खाने आऊँगा, उनसे कह दीजिए ?

उ० : 'हंसगुल्ले खाते रहो, बेटा जी चुपचाप।
उनके रसगुल्ले नहीं, पचा सकोगे आप ॥

**मनोहर लुधियानी, इंदौर**

प्र० : भगवान को तू और पिताजी को तुम कहकर क्यों पुकारते

उ० : प्यार जब गाढ़ा हुआ तो 'आप' से तुम हो गये,
और भी ऊंचे चढ़े तो तुम से 'तू' वह हो गये।

**पारितोष जैन, कानपुर**

प्र० : मनुष्य और पशु में क्या अन्तर है काका ?

उ० : मानुष 'दीवाना' पढ़े, पशु चरते हैं घास,
मानव हंसता है मगर पशु के पास न हास।

**चत्रु मुडा ए० बजाज, अमरावती**

प्र० : आप कांग्रेस में हैं या जनता पार्टी में ?



उ० : पलड़ा भारी हो जिधर, उधर बनाओ काम,
कला हमें सिखला गए श्री जगजीवन राम।

**कमलकान्त जैन, दिल्ली ६**

प्र० : सुना है, आपने कभी रामलीला में रावण का पार्ट किया था ?

उ० : बन गई मंदोदरी मम्मी तुम्हारी जिस समय,
पार्ट रावण का अदा, हमने किया था उस समय।

**रमेश कुमार मेहरा, पत्थलगांव (म. प्र.)**

प्र० : दीवानी और दीवानगी में क्या अंतर है ?

उ० : दीवानी दीवानगी, तन-मन पर चढ़ जाय,
दोनों एकाकार हों, फर्क न कुछ रह पाय।

**महेश कुमार रेनु, इंदौर**

प्र० : काकाजी, क्या कभी आपने किसी से इश्क किया है ?

उ० : फकत है एक ही कमरा, मुहब्बत पर लगा पहरा,
उन्होंने मायके से अपनी बूआ भी बुलाली है।

**अजय कुमार शर्मा, सहारनपुर**

प्र० : चांद में तो दाग होते हैं, फिर भी सुन्दरियों की तुलना चांद से क्यों की जाती है ?

उ० : ऊबड़-खाबड़ चांद, खबर यह जिस दिन आई,
सभी चन्द्रमुखियों पर, घोर निराशा छाई।

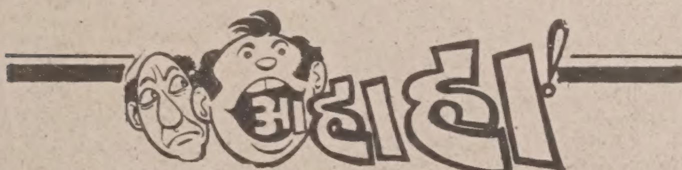
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर

**काका के कारतूस**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

## चाट जा पूरी मलाई

**आजाद रामपुरी**

बेअदब और बेरुखी को, फार्मूला मानकर।
क्या भला है, क्या बुरा है, इसकी मत पहचान कर ॥
ये बहारें लूट खुशियां, मौज में हो जा लबालब,
बन जा बुद्धू फर्स्ट नम्बर, सब कलायें जानकर ॥
सबको मक्खन तू लगा, होकर स्वयं चिकना घड़ा,
चाट जा पूरी मलाई, जग को मूर्ख मानकर ॥
घूंस से नजरें लड़ा तू, उल्लुओं को फांस कर,
भांग सी पी जा बुराई, घोट-गहरी छान कर ॥
खेंचि बीड़ी के कशों को, चाट ले तलुवे किसी के,
वक्त पड़ते ही गधे को, बाप अपना मानकर ॥






पिता ने पुत्र और पत्नी की ओर रोषपूर्ण नेत्रों से देखकर कहा—"तुम्हारे इस लाड़ले ने मेरी जेब से पैसे चुराये हैं।"

"लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि पैसे इसी ने चुराये? मैं भी निकाल सकती हूं तुम्हारी जेब से पैसे?" पत्नी ने तुनक कर कहा।

"मैं जानता हूं! तुम निकालतीं तो जेब में कुछ बचता ही नहीं।" पति ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया।

●



धुलाई के लिए कपड़े भेजते समय एक स्त्री को अपने पति के कोट की जेब में एक पर्चा मिला, जिस पर एक टेलीफोन नम्बर लिखा था। अनायास ही उसके मन में शंका उठी कि टेलीफोन के इस नम्बर को उसके पति ने हिफाजत से क्यों रख छोड़ा है? कहीं उसका पति किसी········और यह मालूम करने के लिए कि नम्बर किसका है, उसने उस नम्बर पर टेलीफोन मिलाया। लेकिन कई बार मिलाने पर भी वह नम्बर खाली नहीं मिला। अन्त में, खीझकर जब वह रिसीवर रखने लगी, तो एकाएक उसकी नजर टेलीफोन के डायल पर पड़ी। वहां वही नम्बर लिखा हुआ था। टेलीफोन का नम्बर अभी हाल में बदला था, अतः उसके पति ने याद रखने के लिए उसे पर्चे में लिखकर अपनी जेब में डाल लिया था।

●

# सत्यजित रे की पहली हिन्दी फिल्म

(और शायद आखिरी भी, क्योंकि पहली की असफलता के बाद शायद ही कोई मूर्ख निर्माता अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारने को तैयार हो ।)

**निर्माता-सुरेश जिन्दाल** (अब शायद मुर्दाल)

फिल्म के कलाकारः

**सुनजीव कुमार, अमचद कान, सैय्यद जाफरानी, अंग्रेज अभिनेता रिचर्ड आठ आने ब्रो, सब आना आजमी, फरीदा मलाल, डेविड, वीना, लीला मिसरा कानापलसीकर शतरंज के खंडारी**

ईंटमैन कलर



## शतरंज के खंडारी

मुंशी प्रेमचन्द की कहानी की मिट्टी पलीती पर आधारित

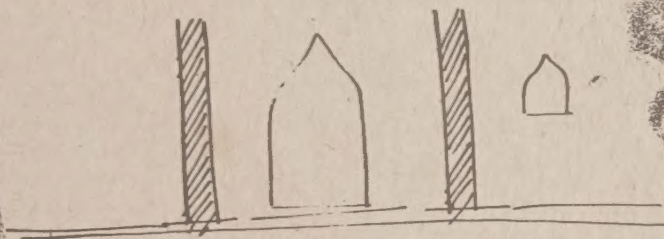
मशहूर निर्देशक सत्यजित रे की पहली फिल्म होने के कारण इसका काफी शोर था । लेकिन हुआ ऐसा ही जैसे खोदा पहाड़ और निकली चुहिया । इस फिल्म पर बहुत मेहनत की गई थी लेकिन जैसे कि आमतौर पर होता है । जब बावर्ची कभी खाना बहुत अच्छा बनाने की कोशिश करता है उसी दिन खाना बिगड़ जाता है । अच्छे बनाने की धुन में या तो मसाला ज्यादा पड़ जाता है या नमक ज्यादा हो जाता है । बड़े-बड़े नामी एक्टर कास्ट में होने पर भी फिल्म की लुटिया डूबने से नहीं बच सकी । शतरंज के खंडारी की कहानी की पैरोडी पढ़ कर फिल्म से अधिक आनन्द उठाइये ।

अवध में नवाब वाजिद अली शाह का राज्य था । उन्होंने एक बार अंग्रेज रैंजीडैन्ट के यहां उसका बाथरूम देखा और आंगन में स्वीमिंग पूल देखा । स्वीमिंग पूल मार्बल चिप्स और वनीशन टाइल्स का बना हुआ था । वाजिद अलीशाह को पूल बहुत अच्छा लगा, उन्होंने उसमें नहाने की इच्छा प्रकट की. रैंजीडैन्ट ने इन्कार कर दिया क्योंकि वाजिद अली शाह छः छः महीने अपनी जुराबें नहीं उतारता था । उसके पैरों से स्वीमिंग के सारे पानी का गंदा होना अंग्रेज को सहन नहीं था । वाजिद अली शाह ने अपने महल में ही स्वीमिंग पूल बनाने का निर्णय किया । उनकी इच्छा यह भी देखने की थी कि स्वीमिंग पूल में डुबते उतरते हुक्का गुड़गुड़ाने पर कैसा आनन्द आता है । देसी इंजीनियर स्वीमिंग पूल बनाना नहीं जानते थे । जब अंग्रेज रैजीडेंट से इंजीनियरिंग नो हाऊ की मांग की गई तो उसने नो-हाऊ देने से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि उसका कहना था, वह, वाजिद अली शाह चाहे तो, उसे एटमबम व उदजन बम का सीक्रेट फार्मूला दे सकता है परन्तु बाथ टब और स्वीमिंग पूल का भेद नहीं बता सकता । यह दोनों चीजें अंग्रेजों के टॉप सीक्रेट रहस्य हैं और अंग्रेजों व हिन्दुस्तानियों में एक बाथ टब और स्वीमिंग पूल का ही तो फर्क था ।

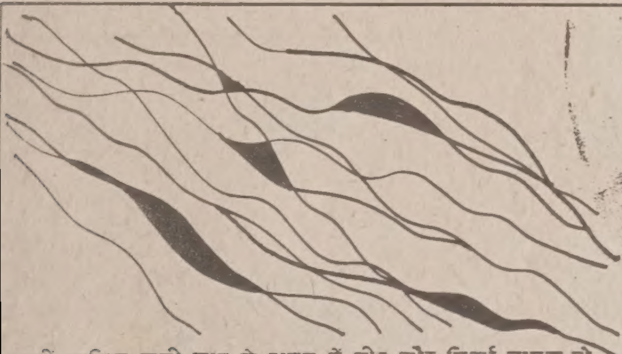


इस बात पर वाजिद अली शाह बहुत तिलमिलाया। वह दिखा देना चाहता था कि डूबने के लिये स्वीमिंग पूल न हो तो क्या हुआ उसे हिन्दुस्तानी ढंग से डूबना आता है। उसने दिन-रात नाच-गाने और सीक्रेट फार्मूला की महफिलें जमानी शुरु कर दीं स्वीमिंगपूल में डुबकी न लगा सका तो क्या हुआ वह ऐश और राग रंग में तो डूब ही सकता है। स्वीमिंग पूल का यही तो भारतीय रूप है। इसके इलावा उसे एक दिन यह सपना भी आया कि भविष्य में फिल्म नाम की चीजें बनने लगेंगी। फिल्मों का मुख्य आकर्षण नाच गाना होगा। फिल्मी निर्माता उसके जीवन पर फिल्में बनाने को लालायित हो जायेंगे क्योंकि उसकी स्टोरी लेने पर फिल्म में नाच गाने ठूंसने का भरपूर मौका मिलेगा लेकिन वाजिद अली शाह स्वीमिंग पूल में न नहा पाने का गम न भुला सका। सपने में उसे स्वीमिंग में अंग्रेज मेमों के कूदने की छपाक-छपाक की आवाजें सुनाई पड़तीं। धीरे धीरे वह कमजोर होने लगा। स्वीमिंग पूल का दुख घुन बन कर उसके स्वास्थय को खाने लगा।



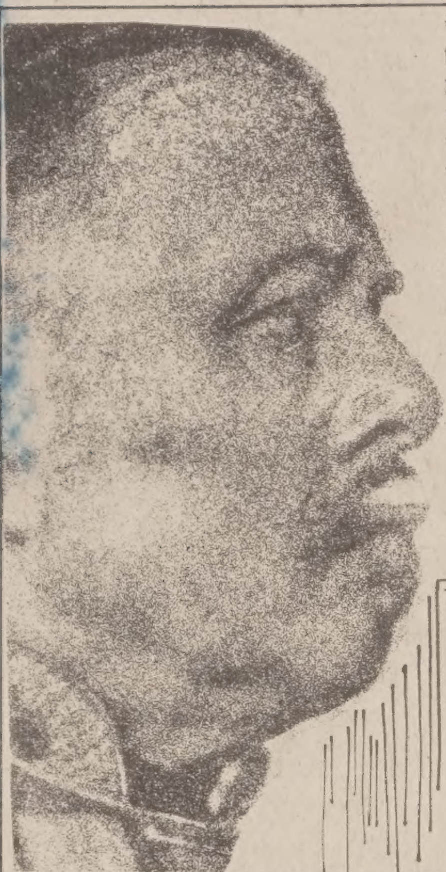




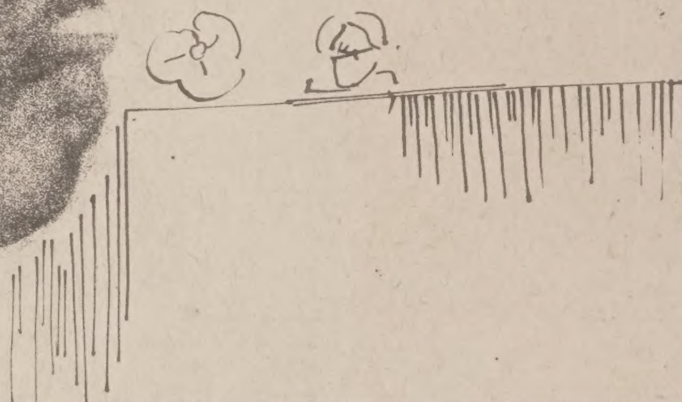




उन्हीं वाजिद अली शाह के राज्य में मीर और मिर्जा नामक दो अमीर भी रहते थे। उन्हें शतरंज का बड़ा शौक था। वे भी दिन-रात शतरंज में डूबे रहकर स्वीमिंग पूल न होने का गम भुलाते रहते थे। शतरंज की ओर रुझान होने का एक कारण यह भी था कि उस समय क्रिकेट इतना लोकप्रिय नहीं था, न ही सुरेश चतुर्वेदी तथा अनन्त सीतलवाड़ थे जो बारी-बारी से अंग्रेजी और हिन्दी में टैस्ट मैचों का आंखों देखा हाल प्रसारित करते। बहरहाल, शतरंज के कारण ही मीर और मिर्जा की बेगमें नाखुश थीं। उस समय टी० वी० भी नहीं था जो दिल बहलातीं। बेगमों के सुखदुख की ओर से बेखबर दोनों शतरंज में खोये रहते। कम से कम वह बीवियों को चेंज और पैरीमेसन के नावल ही लाकर दे देते। फलस्वरूप मीर की बीवी ने मीर के भांजे से ही अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिये।



उधर अंग्रेज भी अपनी चालें सोच समझ कर चल रहे थे। वे किसी न किसी बहाने एक-एक करके भारतीय रियासतों को हड़प रहे थे। उन्हें पता था भारतीय राजे स्वीमिंग पूल को बनाने की विद्या न जान पाने के गम में दुबले पतले हो रहे हैं और उनमें लड़ने की ताकत नहीं रही है। इसके अलावा सभी राजे व नवाब नाच-गानों की महफिल में डूबे हुए थे। सब अपने-अपने फिल्म प्रास्पेक्टस ब्राइट करने में लगे थे—ट्रेड यूनियनों का भी जोर था। अमृत डंगे नाम का एक कम्युनिस्ट इस फील्ड में था उसने नर्तकियों को उभार कर उनकी एक ट्रेड यूनियन बनाई थी। इसका राजनीतिक स्थिति पर बहुत बुरा असर पड़ा। नवाब लोग चाहते तो भी नाच गाने की महफिलें बन्द नहीं कर सकते थे क्योंकि ऐसा करने पर नर्तकियों की रोजी खतरे में पड़ जाती और वे रिट्रेन्चमेंट के खिलाफ सख्त आन्दोलन छेड़ देतीं और उनकी सरकारें खतरे में पड़ जातीं। अंग्रेजों के लिए यह सुनहरा मौका था।

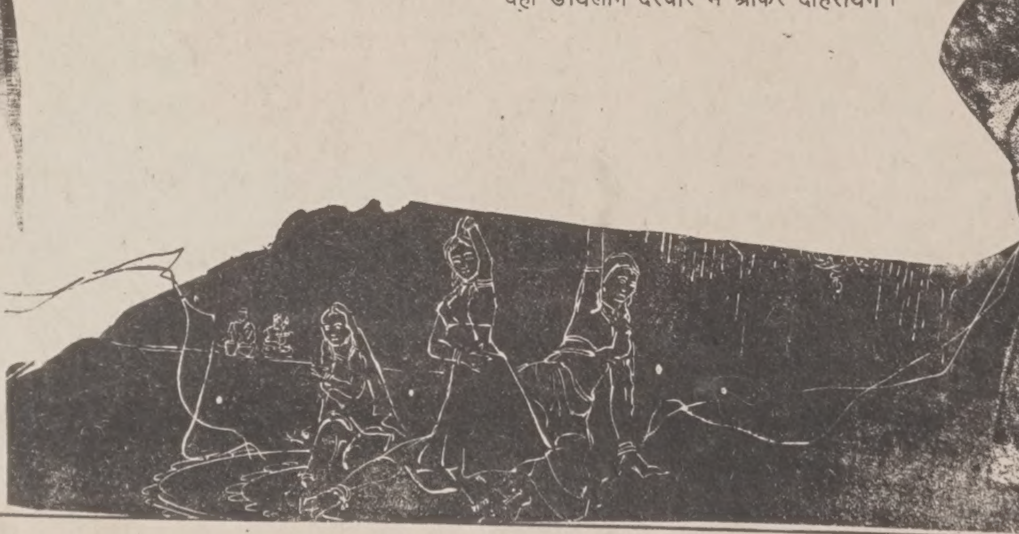






अवध की आखिरी रियासत बची थी। अंग्रेज जनरल आउट रैम ने उस वक्त अवध पर कब्जा करने का मौका ठीक समझा। उसने वाजिद अली शाह को अल्टीमेटम दे दिया कि वह गद्दी छोड़ दे। उसे सूचना मिल चुकी थी कि वाजिद अली शाह इतना कमजोर हो चुका है कि म्यान से तलवार निकालने-निकालने में हांफने लगता है। माथे पर पसीने की बूंदें आ जाती हैं—आउट रैम अंग्रेज सेना की टुकड़ी लेकर अवध पर कब्जा करने चलने से पहले अपने सेक्रेटरी से दो रील लम्बी अंग्रेजी में बात करता है बोर होकर दर्शक हॉल छोड़कर भाग जाते हैं। वाजिद अली शाह भी गाना गाता हुआ गद्दी छोड़ देता है। जब उसे यह पता लगता है कि जनरल और उसका सेक्रेटरी दोबारा वही डायलाग दरबार में आकर दोहरायेंगे।





जिस समय अंग्रेज सेना लखनऊ में प्रदेश कर रही थी और चारों ओर उथल-पुथल मची थी तो वे उस समय भी अपनी शतरंज की बाजी में डूबे थे उन्हें अंग्रेजों के आने की सूचना मिलती है परन्तु वह नहीं उठते खेल जारी रखने का निर्णय करते हैं। वे वाजिद अली शाह की आदतों से परिचित थे उन्हें पता था कि गद्दी से उठते समय वाजिद अली शाह अपनी भौंडी आवाज में गाना गाना शुरू कर देगा—अंग्रेजों से लड़ाई में वे दोनों बच भी गये तो भी उसका गाना सुनकर जिन्दा नहीं बच सकेंगे उनका यह निर्णय सही था—जब वाजिद अली शाह गाना गाता हुआ दरबार छोड़ने लगा तो सारे उपस्थित लोग ऐसे ही मर गये जैसे बेगोन स्प्रे छिड़कने पर कॉकरोच मर जाते हैं।






असली कहानी फिल्म खत्म होने के बाद शुरू होती है। वितरकों ने फिल्म देखी तो उन्होंने उठाने से इंकार कर दिया। क्योंकि फिल्म का पिटना प्रायः निश्चित ही था। मूल कहानी में कई बेकार की बातें जोड़ उसे बिगाड़ा गया था। इधर-उधर की बेकार की ऐतिहासिक जानकारी भर कर फिल्म इंगलैंड का इतिहास पुस्तक जैसी बोरियत भरी बनाई गई थी। अब सत्यजीत रे की काफी प्रसिद्धी है। उनकी बनाई एकमात्र फिल्म डिब्बों में पड़ी रह जाये यह कैसे हो सकता है? अब सरकार ने टांग अड़ाई, उसने फिल्म फाइनैंस कार्पोरेशन द्वारा फिल्म रिलीज करवाई और फिल्म पर से मनोरंजन कर हटा दिया ताकि लोग सस्ती टिकट के लालच में ही देख डालें। जब देखा कि उसका भी कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है तो फिल्म को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म घोषित कर दिया। सरकार भी अपने डूबे पैसे इसी प्रकार निकालने की कोशिश कर रही है। कुछ भी हो प्रेम चन्द ने शतरंज के खिलाड़ियों के रूप में जो दो अमर पात्र खड़े किये थे उनकी फिल्म में बड़ी बेदर्दी से हत्या की गई है। उनके चरित्र विकास पर ध्यान ही नहीं दिया गया अच्छा होता फिल्म का नाम "शतरंज के खिलाड़ियों का कत्ल" होता।



# आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

**प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला** : मनुष्य जीते जी सब कुछ कब हार जाता है ?

उ० : क्या उत्तर दें इस प्रश्न का ? हमें तो लगता है इस पत्र पर आप श्री राजनारायण या श्री चन्द्रशेखर का पता लिखने की बजाए भूल से हमारा पता लिख गये हैं।

**पुरषोतम बाल चन्दानी—बैरागढ़, भोपाल** : पहले प्रेम करना चाहिए या विवाह ?

उ० : बूर के लड्डू पहले खा लीजिये या बाद में, फर्क क्या पड़ता है।

**अर्चना कुमारी भारद्वाज—रोहतक** : अब दीवाना पढ़ती हूं तो हंसी कम आती है। बताइये, दीवाना में हास्य सामग्री कम हो गई है, या मुझे कुछ हो गया है ?

उ० : न आप को कुछ हुआ है न दीवाना को। कभी-कभी आप दोनों के मूड में ट्यूनिंग नहीं होती होगी। या हम जो निशाना लगाने की कोशिश करते हैं वह चूक जाता होगा। जैसे एक बार एक लड़का नदी किनारे एयरगन से बत्तखों का शिकार कर रहा था। उसके पिता ने कहा, "पप्पू, इतनी सारी बत्तखें तुम्हारे सामने हैं, तुम गन का घोड़ा क्यों नहीं दबाते ?" इस पर पप्पू ने कहा, "मैं क्या करूं ! जैसे ही मैं एक बत्तख का निशाना लगाकर घोड़ा दबाने लगता हूं। दूसरी बत्तख बीच में आ जाती है।" कहिये अर्चना जी, अब हंसी आई ?

**कमल किशोर कपूर—अमरोहा** : अंकल आप बातूनी होने पर इतने सारे लोगों द्वारा पसन्द किये जाते हैं। परन्तु हमारे शहर में तो बातूनी आदमी से लोग बहुत चिढ़ते हैं।

उ० : बिना सोचे समझे चिढ़ना तो बहुत बुरी बात है। इससे कोई हमारे जैसा बेकसूर, बेमौत ही मारा जाएगा। जैसे एक बार एक मुर्गी ने देखा कि दीवाना में रंग भरो प्रतियोगिता प्रकाशित नहीं हुई है। सो उसने अपना शौक पूरा करने के लिए अपने कई अंडे नीले-पीले और जामनी रंगों से रंग लिए। मुर्गा जब घर लौटा और उसने मुर्गी के रंगीन अंडे देखे तो वह ऐसा चिढ़ा कि उसने पड़ौस में रहने वाले एक मोर की हत्या कर दी। उस बातूनी मोर को कई बार मुर्गी से बातें करते देखा गया था।

**नरिन्द्र कुमार निन्दी—कपूरथला** : कोई आपको मूर्ख कहे तो क्या आपको बुरा नहीं लगता ?



उ० : जो हम हैं नहीं उसके कहने पर हम बुरा क्यों मानें ? जैसे हलफ इज्जत के एक मुकदमे में जिरह करते हुए वकील ने मुल्जिम से पूछा, "इसने तुम्हें क्या कहा ?" मुल्जिम ने उत्तर दिया, "वह शब्द किसी शरीफ आदमी के सामने नहीं कहे जा सकते," इस पर वकील बोला, "और वह शब्द इसने तुम्हारे सामने कहे। जानते हो इससे तुम क्या सिद्ध कर रहे हो ?

**हेमन्त सुंहालका—चितौड़ गढ़** : क्या आप मेरी कविता प्रकाशित करेंगे ?

उ० : पढ़ने से पहले हम क्या फैसला करें।

**गोपाल सिंहल—फतह नगर** : आपने कालेज लाईफ में कितनी बार चप्पलें खाईं ?

उ० : वहां से तो बाल-बाल बच गये थे। इसके बाद एक चप्पल के नीचे आए तो बाल नहीं बचे।

**अशोक कुमार मोंगा—फरीदकोट** : यदि सांप के कान नहीं होते तो वह सुनता कैसे है ?

उ० : आवाज से, हवा में जो लहरें पैदा होती हैं और धरती या किसी वस्तु में जो कम्पन पैदा होती है, अपने उस शरीर पर महसूस करके वह उनसे काम लेता है जो हम कानों से लेते हैं।

**पवन खत्री, "बैरागी"—इन्दौर** : प्यार छुप कर क्यों किया जाता है ?

उ० : क्योंकि सबके सामने बात नहीं बनती। एक बार हमने एक मंदिर में देखा कि एक आदमी भगवान की सोने की मूर्ति को ऐसे प्यार करना चाहता है कि सीने से लगा ले। इसके लिए वह कनखियों से सबकी ओर देख रहा था। और बात नहीं बन रही थी। पर एक बार उसे छुप कर प्यार करने का मौका मिला तो बात बन गई। भगवान की सोने की मूर्ति वहां से गायब थी।

**सुरेश और अशरफ़—मुंगेर** : आप अपने को हमेशा खरबूज़ा क्यों कहते हैं ?

उ० : क्योंकि हम आप को छुरी समझते हैं। हम आप पर गिरें तो भी हमारी शामत, आप हम पर गिरें तब भी हमारी शामत।

**कैलाश चन्द्र जैन—तलवाड़ा बुजुर्ग** : चाचा जी आप किसे अधिक महत्व देते हैं ? स्वयं को, हमारे पत्रों को या चाची को ?

उ० : आपकी चाची को, हमारे प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई में इतनी हिम्मत नहीं कि वह होमनिनिस्टर से टक्कर ले सकें। फिर हम किस खेत की मूली हैं।

**ललित कुमार गोयल—कोटकपुरा** : चाचा जी, आपके दांत असली हैं, या नकली ?

उ० : हमने इस प्रश्न का सही उत्तर दिया तो आप दांतों तले उंगली दबाकर रह जायेंगे। पर यह तभी सम्भव होगा, जब दांत हमारे हों और उंगली आपकी।

**आपस की बातें**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# बन्द करो बकवास


यह है रेशमी जुल्फों का अंधेरा न घबराइये।
वन्द करो बकवास. कितनी बार कहा है कि अपनी विग को कमरे में न टांगा करो. आते-जाते उलझना पड़ता है।
टिक
हो जरा ठहरो, चले जाना आखिरी सलाम लेते जाना।
बन्द करो बकवास, तुम्हारे सलाम लेते-लेते एक घण्टा हो गया है। अब एक मिनट और रुका तो गाड़ी छूट जाएगी।
गापुची-गापुची गम-गम, किसी की किसी को कम कम। ओ सनम…हम दोनों साथ रहें जनम-जनम।
बन्द करो बकवास, जनम-जनम तो तुम्हें साथ रहना ही पड़ेगा पागलखाने में। अगर इस तरह पागलों की तरह बोलोगे तो।

# मीर बीमार हुए

फिक्र तौंसवी

मैं बेहद परेशान था बल्कि लज्जित था लज्जित—होने का कारण मेरा भाग्य था कि मुझे कोई सीरियस बीमारी नहीं होती थी। जब भी कोई बीमारी आती वह नजला जुकाम में बदल जाती। अधिक से अधिक सिर दर्द, पेट का दर्द, या कोई फोड़ा उभर जाता और मुझे पीठ दिखाकर नौ-दो-ग्यारह हो जाता। दोस्त और रिश्तेदार मुंह छिपा ताना दिया करते कि इन अनावश्यक बीमारियों पर कोई आपसे क्या हमदर्दी दिखाये। मेरी बीवी तो कनखियों से कई बार संकेत भी कर चुकी थी कि मैं आपके लिए मर-मिटने को तैयार हूं लेकिन इस मर-मिटने का कोई ठोस आधार भी तो हो।

और न जाने मेरे किस शुभचिंतक की प्रार्थना सुनी गयी कि एक दिन सुबह को शेव करके उठा तो मेरे डगमगाते पांव ने पुकारा—'लेना कि चला मैं।' मेरी बीवी जो शायद इसी शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में अधेड़ हो गयी थी। फौरन डाक्टर को बुला लायी।

डाक्टर ने कहा—'यह डगमगाहट ही नहीं है, सीरियस बीमारी है।'

बीवी की जबान से अनायास निकला —'हे भगवान! यह सीरियस बीमारी इनके बजाय मुझे लग जाए।'

डाक्टर ने रूलिंग दिया—'यह फैसला अस्पताल में जाकर होगा कि बीमारी किस जिस्म के लिए अनुकूल है। यह विवादास्पद समस्या है।'

इतने में मेरे बहुत से दोस्त और रिश्तेदार जमा हो गए थे। उन्होंने डाक्टर से 'वंस मोर' कहा और खुदा को धन्यवाद दिया। आखिर मैं थर्डरेट बीमारियों के चंगुल से निकल आया और अब सीधे रास्ते पर चल पड़ा हूं। उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए। उन्होंने तालियां बजायीं। कई एक असीम हुलास में नृत्य करने लगे। मेरी बीवी ने भावुकता में कांपते शब्दों में घोषणा की कि वह मेरे तन्दुरुस्त हो जाने पर अनाथों को खाना खिलायेगी।

अस्पताल के बड़े डाक्टर ने कानाफूसी करते हुए मेरे एक दोस्त को बताया कि यह नर्विस ब्रेक डाउन की बीमारी है। हो सकता है कि कई बरस लग जाएं।'

'कई बरस...।' मुझे अनाथों का भविष्य बहुत खतरे में दिखाई दिया।

अस्पताल के बैड पर लेटते ही मुझे बेहद संतोष हुआ। न परेशानी शेष रही थी न लज्जा ही बल्कि गर्व से फूला न समाता था कि अब मैं इस सीरियस बीमारी के कारण कई लोगों को ऑब्लाइज कर सकूंगा। मेरे दोस्त ईमानदारी और सहानुभूति का खुले दिल से प्रयोग कर सकेंगे। रिश्तेदारों को ठंडी आहें भरने और आंसू थरथराने का मौका मिलेगा। मेरे एक दार होंठ हिलाने पर वह गर्दनें कटवाने को तैयार हो जायेंगे। मेरी आंख का एक हल्का-सा संकेत उनकी जंग लगी आत्मा के सभी बन्द दरवाजे खोल देगा। मेरे बदन में एक छोटी-सी टीस उठेगी तो दोस्त 'मुर्गेबिस्मिल' (जिबह किया जाने वाला दरिन्दा) की तरह अस्पताल की सड़क पर तड़पते हुए दिखाई देंगे। मेरे हरेक हाल पूछने वाले के होंठों पर उंगली रखकर मेरी बीवी कह सकेगी—

'सरहाने मीर के आहिस्ता बोलो,
अब टुक रोते-रोते सो गया है।'

अर्थात् मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता था कि जिन्दगी में किसी के काम तो आया। दूसरों की प्रसन्नता के कुछ क्षण भी उपलब्ध हो जायें तो वह कोमल फूल और कीमती पत्थर आदि से कम नहीं होते। अन्यथा इससे पहले तो जिन्दगी जैसे उजाड़ बियाबान मरुस्थल में गुजर रही थी। न किसी के आंसू, न मुस्कराहट, न भावनाओं से चूर-चूर होंठ, न किसी से हमदर्दी, न किसी का [illegible], न न किसी की परीक्षा, न कोई परीक्षार्थी।

अस्पताल में जाते ही सबसे पहले मेरे एक मंत्री दोस्त ने इस मरुस्थल में एक फूल खिला दिया। अर्थात् एक दोस्त के टेलीफोन पर उन्होंने मैडिकल सुपरिन्टेंडेन्ट से कह दिया कि इस रोगी को तुरन्त एक बैड दिया जाये। अस्पताल में बैड उपलब्ध होने का मतलब होता है जैसे किसी बेरोजगार को नियुक्ति पत्र मिल जाए। मेरे एक प्रोफेसर दोस्त ने मेरी हवा बांधते हुए कहा —'अजी बैड क्यों न मिलता। इनकी पहुंच तो मंत्रियों तक है।'

मुझे मंत्रिमंडल की इस गिरावट पर तरस खाना चाहिए था, लेकिन मंत्री की खुशी मुझे बैड मिल जाने में छिपी थी। इसलिए उस गिरावट को शहद का घूंट समझ कर पी गया।

बैड मिल जाने के बाद तीन-चार दिन तक मैं यह देखता रहा कि दोस्त और रिश्तेदार अत्यन्त सरगर्म हो गए हैं। चारों ओर भागे-भागे फिरते हैं। वह क्षण-क्षण भर की अपनी दौड़-धूप की रिपोर्ट ले आते और मेरे गले में उंडेल देते। कोई बताता कि अस्पताल का हार्ट स्पेशलिस्ट मेरे कालेज का साथी है और मुझ से मैथमेटिक्स की गाइड बुक ले जाया करता था। कोई रहस्योद्‌घाटन करता कि ब्लड बैंक के इंचार्ज से कह दिया है कि आप भाग्यशाली हैं कि आपके अस्पताल में एक महान रोगी दाखिल हुआ है। यह इंचार्ज मेरी मौसी का चौथा बेटा है। यद्यपि मौसी ने उसे सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है लेकिन उसकी लव मैरेज में पूर्व के सभी लैटर मैंने ही लिख कर दिए थे। एक दोस्त ने तीन अखबारों में मेरे चित्र और बीमारी की खबर बेहद जोशीले अंदाज में प्रकाशित करवा कर खुशी प्राप्त की। जैसे उसने मुझे मरने के बाद स्वर्ग की सीट दिलवा दी हो। चार-पांच दोस्तों ने कॉफी हाउस में एक प्रस्ताव पास करवा दिया कि भगवान न करे, अगर फिक्र तौंसवी की मौत हो गयी तो पूरे कॉफी हाउस के सदस्य न केवल एक साथ मरघट तक आयेंगे बल्कि उनके बचे-कुचे परिवार के लिए चन्दा भी जमा करेंगे।

यह जानलेवा गतिविधियां देखकर मुझे ऐसे अनुभव हुआ जैसे सारा भारत मेरी बीमारी के लिए जिन्दा है। अन्यथा कब्रिस्तान बन गया होता, हर रोज कई डाक्टर बारी-बारी से आते और मुझे लेबोरेटरी समझ कर परीक्षण शुरू कर देते जैसे यह डाक्टर न हों, स्कूल के छात्र हों और मैं एक कापी हूं जिस पर वह होम वर्क कर रहे हों। पहले तो मैं समझा कि मेरी बीमारी से खुश होने के कारण सरगर्म हैं लेकिन एक बार मैंने उनकी खुशी से बोर होकर एक

डाक्टर से पूछा—'जनाब, आपको बीमार
ा प्रेम है या बीमारी से ?'

वह बोला—'बीमारी से। क्योंकि हम
बीमार पर रिसर्च करके बीमारी तक पहुंचते
ं ताकि आप पर रिसर्च से मानव समाज
को भी लाभ पहुंचे।'

'और अगर मैं न आता तो मानव
समाज का क्या होता ?'

इसके उत्तर में डाक्टर ने अपने
असिस्टेन्ट को आदेश दिया—इस बीमार
की बी. सी. जी. कराई जाये। दिमाग में
जरूरत से ज्यादा खराबी दिखाई देती है।'

लेकिन मैं जानता था कि मेरे दिमाग
की खराबी के कारण मेरी असीम खुशी है
जो बीमार बन कर मुझे प्राप्त हो रही है।
मैं यह सोच कर झूम उठता कि अस्पताल
में मुझे बेहद रोमांटिक वातावरण मिलेगा।
मैंने सुन रखा था कि कई आर्टिस्ट लोग
अस्पताल में जाकर उपन्यास तक लिखते हैं
और बीमारी को आधुनिक साहित्य में वृद्धि
का साधन बनाते हैं। उनमें से कई एक
नर्सों से प्रेम भी करने लगते हैं बल्कि कई
नर्सें तो नौकरी को लात मार देती हैं और
उपन्यासकार की आत्मा के नरम कोने में
दुल्हन बनकर घुस जाती हैं।

दूसरे दिन जब मैं किसी नर्स के आने
की प्रतीक्षा में आंखें बन्द किए पड़ा था,
किसी ने मेरा कंधा झकझोरा। यह वाकई
नर्स थी (मेरे सम्भावित उपन्यास की सम्भा-
वित नायिका)। मैंने आँखें खोल कर देखा।
नर्स खूबसूरत नहीं थी। खूबसूरत दुनिया
 जिस्म पर एक चीथड़ा थी। उसने पहले
मुझे सूंघा और फिर वातावरण को सूंघा
से उसे अहसास हुआ कि वातावरण अपूर्ण
। इसलिए उसने मेरे बैड के सिरहाने एक
ले से गत्ते पर मैडिकल चार्ट लटकाकर
वातावरण को पूर्ण कर दिया। और मुझे
सा अनुभव हुआ जैसे उसने मेरी कब्र पर
या जला दिया हो।

मेरी बीमारी छलांगें लगाती, उछलती-
दती हुई जब कई सप्ताह आगे बढ़ गयी
 मुझे संदेह होने लगा कि डाक्टरों को
न सेवा से कोई दिलचस्पी नहीं है उनकी
वृत्ति उस औरत से अच्छी नहीं है जो पति
 लिए खाना तैयार करती है। सायंकाल
र्जा लाती है और सवेरे को दूध के डिपो
 लम्बी पंक्ति में दो बोतलें लाने के लिए



अपनी बारी की प्रतीक्षा करती है। आमतौर पर इसे गृहस्थ की सेवा कहा जाता है, लेकिन गृहलक्ष्मी से पूछा जाये तो वह इसे उबा देने वाली रोटीन का नाम देती है।

मेरा ख्याल था और खेद जनक सीमा तक गलत ख्याल था कि डाक्टर जब बीमार की सेवा करते हैं तो उसे मनुष्यता का उदय समझते हैं। लेकिन जब मैंने तनिक निकट होकर देखा तो यूँ अनुभव हुआ, वह मनुष्यता से ऊब चुके हैं। वह जब बीमार का ब्लड प्रेशर देखते हैं या उसके हार्ट, जिगर और फेफड़ों की रिपोर्ट का अध्ययन करते हैं तो उन्हे यूं अनुभव होता है जैसे आलू छील रहे हों या सब्जी में नमक-मिर्च मसाले का अनुपात पैदा कर रहे हों। डाक्टर सचमुच एक अनार होते हैं जिसके एक सौ नहीं, हजारों बीमार होते हैं। हर बीमार समझता है, यह अनार मेरे ही खाने के लिए है और डाक्टर की विवशता यह है कि वह किसी बीमार से यह भी नहीं कह सकता, 'दोस्त ? अनार के सम्बन्ध में तुम जो भी दृष्टिकोण बना लो, मैं दखल न दूंगा। लेकिन जालिम ? मुझे पांच मिनट का एकान्तवास तो प्रदान करो ताकि मैं जनसेवा से ऊंचा उठकर एक सिगरेट ही पी सकूं।'

एक दिन मैंने एक डाक्टर से पूछा—'डाक्टर साहब। आपके भीतर की जनसेवा की भावना क्यों मर गयी ?'

वह जैसे दो-दूनी चार का पहाड़ा पढ़ते हुए बोला—'वह तो उसी दिन मर गयी थी जब मैंने इस अस्पताल में नौकरी के लिए बरसों अपने घुटने और माथा रगड़ा। एक अत्यन्त भोंडे, अमानवीय शक्ल के उपमंत्री को समय का जहांगीर और यूसुफ कहा था। मानवता तो इस समाज के लिए अछूत का दर्जा रखती है।'

यह सुनकर मुझे संदेह हुआ कि मेरी सभी भावनाएं अछूत हैं। डाक्टर मेरी भावनाओं को हाथ लगाना नहीं चाहता। वह केवल अस्पताल के मुर्दा कायदे-कानून के चौखटे में घूमे जा रहा है। इस चौखटे के बाहर की दुनिया अछूतों की दुनिया है। इस चौखटे में मानवता प्रवेश नहीं पा सकती। डाक्टर इस चौखटे से बाहर आकर अछूतों को छूना नहीं चाहता। जो बीमार अस्पताल में इस ख्याल से प्रवेश करता है कि डाक्टर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है और लपककर बीमार के जिस्म में जनसेवा का इन्जेक्शन दे देगा और नाच उठेगा। ऐसे बीमार को चाहिए कि वह अछूत ही रहे तो अच्छा है। डाक्टर के लिए सब बीमार समान हैं। सब बोर हैं। सब अछूत हैं।

भोंडे उपमंत्री ने डाक्टर से मानवता छीन ली। अब तो वह किसी लेडी डाक्टर से भी प्यार करने से पहले देख लेता है कि उसका वेतन कितना है।

दोस्त और रिश्तेदारों तक मेरे वार्ड और बैड नम्बर की बाकायदा सूचना पहुंचा

(पृष्ठ ३६ पर)


आपने पिछले अंक में पढ़ा कि पिलपिल-सिलबिल एक लड़की रूबी को अपनी जासूस कम्पनी में लेडी जासूस भर्ती करते हैं। सिलबिल व रूबी एक आसामी का सूटकेस बन्दरगाह में मशहूर अपराधी काले चमगादड़ से बचा कर लाने चल पड़ते हैं। सिलबिल रूबी से विवाह का सपना देखने लगता है। इस बीच काला चमगादड़ सूटकेस वाले पर झपट कर सूटकेस ले भागता है। यहां पढ़िये इससे आगे–
माता जी, नहीं, नहीं, बहन जी मुझे बचाओ। अगर पिलपिल को पता लग गया कि मेरी वजह से सूटकेस काले चमगादड़ के हाथ में पड़ गया है तो वह मेरी खाल में भुस भरवा देगा। कम्पनी में मेरे शेयर काट देगा। बड़ा जालिम आदमी है जी वो। मुझे जादा जासूसी भी अच्छी तरह नहीं आती। अक्ल की भी थोड़ी कमी है। बचपन मां बथुवे और चने का साग बोत खाया है मैंने। इब थम ही बताओ साग खाकर कहीं अक्ल आती है? यह तो पेट में गैस बनाने वाली चीजें हैं। जरा जादा बात करने की आदत है जी मुझे। इब क्या होगा? काले चमगादड़ ने मुझे बर्बाद करके रख दिया। यह आदमी भी मर गया है। इससे कोई खास पते की बात का पता नहीं लगा। यहीं से वापिस अपने गाम चला जाऊं।
ठीक है, तो हम कोशिश करके देखते हैं। लेकिन शर्त यह है कि अब से इस ऑपरेशन की इंचार्ज आप नहीं, मैं हूंगी।
मुझे मंजूर है। इंचार्ज बन कर कौन से मेरे सिर पर ताज धरया था? मैं तो खुद माथा पच्ची के कामों से बचना चाहता हूं।
और दूसरी शर्त यह है कि आपको चुपचाप मेरी बात माननी होगी बगैर कोई सवाल पूछे।
जल्दी-जल्दी यहां से ऊपर चढ़िये। इसी पुलिया पर चढ़ कर काले चमगादड़ ने हमला किया था। यहां से दूर-दूर तक का नजारा नजर आता है। मेरा ख्याल है कि काला चमगादड़ अभी दूर नहीं गया होगा। हमें पुल पर से दूर कहीं उसकी झलक जरूर नजर आ जानी चाहिये।
यो तो बिल्ली की तरह चढ़ रही है।



मुझे लगता है इनमें से एक जरूर काला चमगादड़ होना चाहिए।
जरूर होना चाहिए। इस तरफ से और कोई गया ही नहीं।
आपके पास मिनी फोल्डिंग बाइनाक्यूलर था, वह मुझे दीजिए। जरा देखें क्या माजरा है?
वही है, वही है! अजीब सी पोशाक से साफ पता लगता है कि यही वह काला चमगादड़ है, लेकिन यह दूसरा व्यक्ति कौन है? दोनों में कुछ हो रहा है। काला चमगादड़ दूसरे व्यक्ति को कुछ दे रहा है।
जल्दी!
दूसरा व्यक्ति वही है। यह काले चमगादड़ का आदमी होगा। हमें इसी को पकड़ कर इससे जानकारी हासिल करनी होगी।
शSSSSS!
शुक्र है समुद्र की आवाज के कारण इसे हमारे चलने की आवाज का पता नहीं लग रहा। अचानक हमला करके इसे दबोचने में कठिनाई नहीं होगी।
खैर मुझे क्या? यहां पोर्ट पर कई तरह के नमूने आते-जाते रहते हैं। चीनी चोगे वाले, अरब साफे वाले और जापानी किमोनो वाले। यह बन्दरगाह भी एक तरह से मनुष्यों का अजायब घर है।


तुम क्या जानते हो ?
KUNG FUDUM
क-क-क क्या ?
काला चमगादड़ ? मैं किसी चमगादड़ वमगादड़ को नहीं जानता ।
हमने अभी-अभी तुम्हें काले चमगादड़ से बात करते देखा था । हमें बनाने की कोशिश मत करना । हमारे हाथ कराटे चॉप आजमाने के लिये मचल रहे हैं ।
वह ? अभी उस आदमी से ? उससे मैंने सिगरेट सुलगाने के लिये माचिस ली थी । बस क्या सिगरेट लगाने के लिये माचिस मांगना जुर्म है ।
तुम इस तरह नहीं मानोगे ? हम जानते हैं तुम काले चमगादड़ के आदमी हो ।
मिस रूबी जरा ठहरो ! शायद यह आदमी ठीक ही कह रहा है । इसने माचिस मांगी होगी । वह नीचे फर्स पर देखो, खाली माचिस की पतरी पड़ी है । यह उसी का होगा । फिर यह बात मशहूर है कि काला चमगादड़ अपने साथ किसी को नहीं मिलाता । वह अकेले ही काम करता है ।
माचिस की पतरी ? अगर यह सचमुच काले चमगादड़ द्वारा फेंका गया है तो यह क्या है ? पेंसिल से पतरी पर क्या लिखा है ? शायद काले चमगादड़ की याददाश्त कमजोर है । किसी का टेलीफोन नम्बर लिखा है ।
अगर हमारा यह सूत्र ठीक है तो हमें कार्यवाही करने के लिये कुछ मसाला मिल ही गया है । हमें फौरन सबसे पहले पोस्ट आफिस पहुंच कर टेलीफोन डायरेक्टरी में या इन्क्वायरी से इस टेलीफोन नम्बर का एडरेस पता करना होगा ।
बिल्कुल ठीक !
एडरेस के अनुसार यह फ्लैट है और यह फ्लैट मारिया नाम की लड़की का है । हो न हो काले चमगादड़ की गर्ल फ्रैंड होगी । लेकिन घण्टी का जवाब क्यों नहीं दे रही है ? पाँच मिनट हो गये मुझे घण्टी बजाते ।
या तो काले चमगादड़ ने मना कर रखा होगा या काला चमगादड़ इस समय खुद अन्दर बैठा होगा । काले चमगादड़ ने हम पर झपट्टा मारा तो क्या होगा ?
अब दरवाजा खोलने का दूसरा तरीका आजमाना चाहिये ।
कुंग फू की दुलत्ती बगैर चाबी के भी दरवाजा खोल सकती है ।
धड़ाम !
यह क्या बदतमीजी है ?



काला चमगादड़ कहां है ?
वट दि हैल कल्ला चगमादार ?
वह आदमी जो कुछ देर पहले यहां आया था।
तुम जगन की बात कर रहा है।
हां, हम उसे काले चमगादड़ के नाम से जानते हैं वह जो सूटकेस लाया था वह कहां है ?
तुम्हें उस सूटकेस से क्या लेना है ? इस तरह मेरे फ्लैट में आने का मतलब ?
वह सूटकेस हमारा है हम अपना माल लेने आये हैं।
जगन कभी कोई चीज यहां नहीं छोड़ता। आज बैंक बन्द हैं इसलिये वह सूटकेस यहां छोड़ गया है। वर्ना वह अपनी सारी चीजें लॉकर में रखता है।
लाओ वह सूटकेस हमारे हवाले करो।
क्यों ? जगन से ही ले लेना। अभी माचिस खरीद कर आता ही होगा। मेरे पास वह उसकी अमानत है।
जल्दी करो ! सूटकेस हमारे हवाले करो।
कभी नहीं। मैं किसी की अमानत तुम्हें कैसे दे सकती हूं ? तुम्हें मुझसे वह सूटकेस मांगने का क्या हक है ? मुझे तुम्हारी बात मानने का कोई कारण नजर नहीं आता।
कारण नजर नहीं आता तो कोई बात नहीं। लेकिन यह चौड़े फन वाला रामपुरी चाकू मेरे हाथ में तो नजर आता होगा ?
मिल गया सूटकेस ! मारिया ने उसे अपने कबर्ड में छिपा रखा था। अब तुम फटाफट एक काम करो। मारिया की मुश्कें बांध दो और उसके मुँह में कपड़ा ठूंस दो। उसके भी पहले टेलीफोन की तार काटने का काम करो ताकि हमारे जाने के बाद फौरन ही मारिया कुछ गड़बड़ न कर सके।
अभी पांच मिनट में कर देता हूं।
हम अगर लिफ्ट से उतरते तो जल्दी नीचे पहुंच जाते।
लिफ्ट से उतरना बहुत खतरनाक होता। काला चमगादड़ किसी भी समय लौट कर आ सकता है, वह जरूर लिफ्ट से सफर करता। अगर लिफ्ट के बाहर उससे सामना हो जाये तो मुश्किल होगी। वह सूटकेट पहचान लेता और सबसे बड़ी बात कुंगफू के आर्ट में वह हमसे ज्यादा तेज है।
ऐह !
4
भाई जी, यह लो ! पहुंचा आया सूटकेट डोमीनो के पास बोत खुश हुआ वह, हजार रुपये का करारा चैक हाथ के हाथ ही दे दिया।
कोई गड़बड़ तो नहीं हुई ?
हां डोमिनो बहुत खुश था, उसने टेलीफोन किया वह हमसे परमानेंट तौर पर हमारी सेवायें कांट्रेक्ट करने को तैयार है। मैंने कहा कल लंच पर सारी शर्तें तै की जा सकती हैं। खैर यह तो होता रहेगा, यह बताओ रूबी का काम कैसा है ?
लो बोल्लो ! भाई जी थम भी हद करते हो। जिस काम पर सिलबिल जाये वह अधूरा रहेगा ?
हां, वह तो ठीक है।
ठीक ही है, धीरे-धीरे सब सीख जायेगी। अभी एक्सपीरियेंस की कमी है न। धीरे-धीरे मेरे साथ काम करते-करते चल पड़ेगी। यह उसकी खुशकिस्मती है कि हमारे साथ काम करने का मौका मिला है। हम तो गधे को भी एक महीने में डंडा मार कर जासूस बना दें।
मेरे कान फड़क रहे हैं कहता है कि असली रूबी की रिपोर्ट मिल

# आपके पत्र

...मत पसंद को भमि ... करीं लेखनि सब बनराई। अपनी सब कागद करो, दीवाना गुण लिखा न जाई॥

जी हां! दीवाना की प्रशंसा में मैं (मैं ही क्यों, कोई भी) चाहे जितनी बातें लिख मारे वो अधूरा ही रहेगा। यह अनुभव मुझे ६ वर्षों से दीवाना पढ़ने ...ने के फलस्वरूप हुआ है। काफी दिन हो गए। अब तो दीवाना के पुराने हीरो मांकड़ जासूस या जेम्स बांड ००७ से पुनः मिलने की इच्छा हो रही है। दीवाना का हर पात्र अपने में बेजोड़ है। खास कर मदहोश एवं मोटू-पतलू के पृष्ठ कृपया बढ़ा दें क्योंकि दीवाना का मुख्य आकर्षण यही है। रही दीवाना की 'खामियों' की बात! सो एक बात ने कई पाठकों सहित मुझे एवं मेरे मित्रों को निराशा दिलाई है। वह यह कि हम पाठकों के अनेकों अनुरोध करने पर भी आपने श्री दारा सिंह के कुश्ती जीवन पर लेख प्रकाशित नहीं किया। इसका हमें दुःख है। आशा है कि अब आप हमारे अनुरोध को स्वीकार कर ...शीघ्रातिशीघ्र श्री दारा सिंह के कुश्ती जीवन पर लेख प्रकाशित करेंगे।

**कृष्ण कुमार मल—कलकत्ता**

**आपकी शिकायत शीघ्र ही दूर की जायेगी —सं०**

दीवाना का नया अंक पाकर मानो प्रसन्नता का एक बहुत बड़ा खजाना मिल गया जिसे मेरे लिए संभालना कठिन हो रहा था। प्रसन्नता से बेकाबू होकर मेरा चिल्ली ...ले लगकर भरे हुए बाजार में डांस करने ...लिए जी चाह रहा था। परन्तु इतने ... मनुष्य होने के पश्चात् मैं साहस नहीं कर सका। नये अंक के दीवाना के ढेर सारे ...म्भ जैसे 'काका के कारतूस, आपस की बातें, क्यों और कैसे, खेल खेल में' काफी पसंद लगे। खास कर मुझे 'पत्र मित्र स्तम्भ' काफी मनोरंजक लगता है।

**चिन्ता राम गिरि,—असम**

...पूर्ण से भरा हुआ अंक १७ मिला ... खुशी हुई क्योंकि इसमें हास्य ... थी। मुखपृष्ठ बड़ा सुन्दर ... साहब छतरी से धुआं निकाल ... काका के कारतूस, ... फिल्मी टाइटल बहुत ... सवाल यह है रोचक नहीं था। मोटू-पतलू, ने डाकू बनकर खूब हंसाया यदि फैंटम तीन पेज का कर दिया जाये तो दीवाना में चार चांद लग जायें।

**मोहिनी शर्मा—नारनौल**

दीवाना का अंक १६ मिला, चिल्लीजी का नया करतब देखकर काफी खुशी हुई। 'मोनिका' कहानी काफी रोचक है, इसके लिए ले० संगीता जी को बधाई दें। इस अंक में मुझे विशेषकर 'चिल्ली लीला', 'फिल्म पैरोडी' एवं बात-बे बात की काफी पसंद आए। दो सप्ताहों से आप दीवाना बहुत जल्दी-जल्दी भेज रहे हैं, इसके लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करें। आशा है कि आप 'दीवाना' इसी प्रकार जल्द से जल्द भेजा करेंगे जिससे पाठकगण प्रतियोगिताओं में भाग लेकर लाभ उठा सकेंगे।

**सत्यपाल वधावन,—कतरासगढ**

दीवाना की मैं नियमित पाठिका हूं। लेकिन पत्र पहली बार लिख रही हूं। दीवाना का अंक सोलह बहुत पसंद आया। पैरोडी कंघा की सौगंध बनाम गंगा की सौगंध काफी मजेदार लगी। इसके अतिरिक्त प्रेम-पत्र, चिल्ली लीला, मिलबिल-पिलपिल, मोटू पतलू, बन्द करो बकवास, पचतंत्र, धारावाहिक उपन्यास मोनिका, सवाल यह है, छुट्टन-मिट्ठन, फैंटम, आपस की बातें, मदहोश, परोपकारी भी अच्छे लगे। कहानी नियति का व्यंग्य भी काफी पसंद आई। मैं लेखक को बधाई भेजना चाहूं तो कैसे भेजूं? क्या आप मुझे उनका पता बता सकते हैं? दीवाना का वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क किस पते पर भेजा जाए?

**शकुन शर्मा—रामाकृष्ण पुरम नई दिल्ली-२२**

**लेखक को बधाई आप दीवाना के माध्यम से भेज सकती हैं। वार्षिक सदस्य बनने के लिए आप ४८ रु०, सम्पादक, दीवाना तेज साप्ताहिक, ८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग नई-दिल्ली-११०००२, के पते पर भेजें। —सं०**

दीवाना का अंक १६ प्राप्त हुआ। 'बन्द करो बकवास' व 'परोपकारी' पढ़कर मुझे बहुत आनन्द आया। ... में आपकी पत्रिका अन्य पत्रिकाओं में ... स्थान प्राप्त किये हुए है। इस अंक में मोटू-पतलू व मिल-बिल पिलपिल पढ़कर बहुत मनोरंजन हुआ। आपकी पत्रिका हास्य रस से भरी हुई व ज्ञानवर्धक है। वाकई में दीवाना हास्य व्यंग्य की पत्रिकाओं का राजा है। मदहोश को पढ़ते ही मैं भी मदहोश हो जाता हूं। आपकी फिल्म पैरोडी बेहद पसन्द आती है।

**दया शंकर सोनी—जबलपुर**

दीवाना का अंक १६ मिला लेकिन बहुत इंतजार के बाद। मुखपृष्ठ एवं चिल्ली लीला पसंद आई। फिल्मों के टाइटल ने तो सोने पर सुहागा कर दिया। ... के नये दीवाने रूप बहुत पसन्द आये। यदि आप कभी दीवाना का दाम एक रुपये से दो रुपये भी बढ़ा दें तो भी दीवाना हमारे पास आता रहेगा। हर अंक मजेदार रहता है। फिल्म नामवी साहब को नाम नहीं सूझा के लिए शुक्रिया। यदि आप पैरोडी प्रत्येक सप्ताह दें तो ऐसा लगे जैसे आपने किसी ... के हथेलियों पर मेंहदी रचा दी हो। मिलबिल मिलबिल एवं मोटू-पतलू हर बार की तरह एक हंगामा ... आए।

**पुनीत श्रीवास्तव—सतना**

मैं दीवाना का नया ही पाठक हूं। मैं इसकी रोटी की तरह प्रतीक्षा करता रहता हूं।

अनन्त आश्रम (आनन्द आश्रम), मोनिका नया धारावाहिक उपन्यास (ले० संगीता) टार्च जलने पर काका के कारतूस व और मेरी अस्वीकृत रचना (आजाद राम पुरी) पढ़ी। हर दीवाना अंक बहुत रोचक होता जा रहा। अगले अंक के इंतजार में।

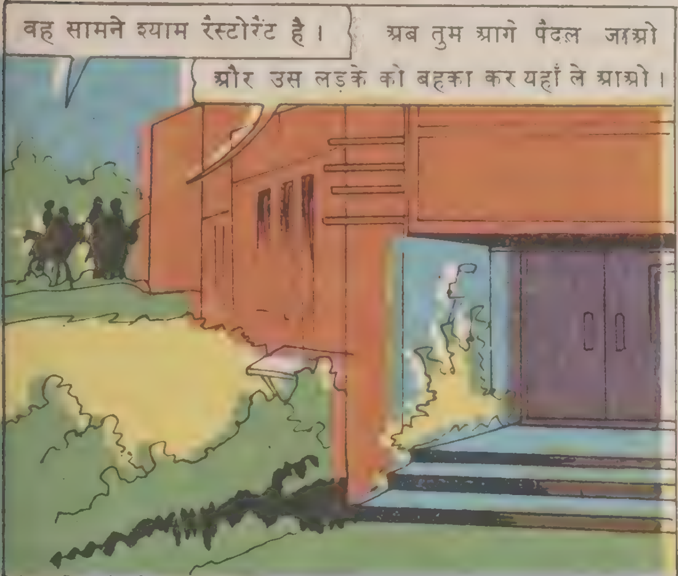
**केशवदेव इन्दोरिया—गणेशगढ़**

दीवाना का अंक १८ मिला, पढ़कर दिल बाग-बाग हो गया, फिलम पैरौडी, 'अनन्त आश्रम' बहुत अच्छी लगी, स्थायी स्तम्भ बन्द करो बकवास, मदहोश व पंचतंत्र सामान्य रहा! परोपकारी ठीक रहा, दीवाना कार्ड ने काफी मनोरंजन किया! सवाल यह है बेकार था? इस बार सबसे अच्छे रहे मोटू-पतलू। दिनों-दिन दीवाना उन्नति कर रहा, इसके लिए शुभकामनाएं।

# मोटू पतलू

पिछले दिनों मोटू-पतलू, चेलाराम, घसीटाराम, और डा० झटका बस द्वारा ग्वालियर जा रहे थे तो रास्ते में झांजर डाकू के गिरोह ने उनकी बस का अपहरण कर लिया था। यात्रियों को लूटते समय चेलाराम की जेब से अंगूठा नन्द डाकुओं की जेब में चला गया था और सुमन कुमारी नाम की एक लड़की के पर्स से डाकुओं को एक पत्र मिला था, जिससे पता चलता था कि एक आदमी को अपने पुर्खों का खजाना और बहुत सा सोना मिला है जिसे वह अपने बेटे पवन कुमार को देना चाहता है। लड़की पवन कुमार को जानती थी और चेलाराम को उस रैस्टोरेंट का पता मालूम था जहां पवन कुमार काम करता था। डाकुओं ने मोटू-पतलू के साथ लड़की के पिता और बस के सभी यात्रियों को पेड़ से बांध दिया और सुमन और चेलाराम को आदेश दिया कि वह पवन कुमार को बुलाकर अपने साथ जंगल में ले आयें। यदि उन्होंने ऐसा न किया तो पेड़ से बंधे सब आदमियों को गोलियों से उड़ा दिया जाएगा। इसके बाद के हंगामे अब आगे देखिये।














मैं बड़ी मुश्किल से यहाँ आई हूं। पिता जी ने तुम्हारे साथ जो सलूक किया उसका उन्हें बहुत खेद है।
नहीं, उसमें मेरी भी गलती थी।
वह तुम से मिलना चाहते हैं।
कहा हैं पिता जी ?
उस पेड़ के नीचे हैं। मेरे साथ चलो। वह बहुत मुसीबत में हैं।
मुसीबत ? कैसी मुसीबत ? चलो मेरे साथ।
क्या इसे सब सच-सच बता दूं। पर ऐसे तो खेल बिगड़ जाएगा। डाकू पेड़ से बंधे लोगों को जीवित नहीं छोड़ेंगे।
दूसरी ओर एक गिलहरी ने पेड़ से लटके घसीटाराम की रस्सी काट दी थी।
और वह पेड़ से गिरे किसी पक्षी के अंडे की तरह नीचे आ गिरा था।
इतने ऊपर से गिरकर तो नारियल फट जाता है। मैं अपने सर के तरबूज को रो रहा हूं तो कौन-सी बड़ी बात है।
घसीटाराम ने इस मौके को गनीमत जाना और डाकुओं की नजर बचाकर भाग लिया।
अब तो मैं इनके फरिश्तों के हाथ नहीं आऊंगा। ऐसे लल्लू पंजू डाकुओं को चकमा देने का बीस साल का तजुर्बा है मुझे।



किस्मत का मारा घसीटाराम भागता-भागता वहीं आ पहुंचा जहाँ पेड़ के नीचे दो डाकू सुमन और पवन का इंतजार कर रहे थे ।
मैं डाकुओं की आंखों में धूल झोंक कर भाग आया हूं। जरा मेरी रस्सियां खोलना यार ।
घूर कर क्या देख रहे हो ? मैं कौन-सा इनाम देने लगा हूं तुम्हें, रस्सी की एक गांठ खोलने के पांच पैसे भी देता है कोई ? और डाकू पकड़वाने पर बीस हजार रुपया देकर पुलिस कौन-सा मुझ पर एहसान करेगी । यह तो मेरा ही दिल गुर्दा है, वरना कोई पचास हजार रुपया लेकर भी झांजर डाकू के गिरोह को नहीं पकड़वा सकता ।
हमें पकड़वाने जा रहा है मच्छर की दुम ! पहले यह इनाम तो वसूल कर ले ।
ओह—! मर गया ।
अरे यह मेरा सर कहाँ घुमा दिया तुमने ? बीस साल के तजुर्बे में इतनी गंदी कीचड़ तो कभी मेरे मुँह में नहीं आई । इस तरह तो मैं इनाम में से तुम्हें धेला नहीं दूंगा । सच कह रहा हूं, मुझे गुस्सा आ गया तो मुझ से बुरा कोई न होगा ।
तभी वहाँ पवन कुमार सुमन और चेलाराम भी पहुंच गये ।
कहाँ है पिता जी ?
यह रहे तुम्हारे पीछे ।


एक डाकू ने रस्सी का फंदा डाला और दूसरे ने उसके मुंह पर रूमाल डाल दिया ।
डाकू उसे घोड़े पर लाद कर जंगल की ओर ले चले । पवन कुमार की समझ में नहीं आ रहा था कि माजरा क्या है ?
ठिकाने पर पहुंच कर पवन कुमार की रस्सियाँ और मुंह से रूमाल खोल दिया गया ।
डाकुओं के चंगुल में ले आई हो । तुमने मेरे साथ इतना बड़ा धोखा किया है ! मुझे तुम से यह आशा नहीं थी सुमन ।
मेरी मजबूरी को समझो पवन, मुझे इच्छा के विरुद्ध यह सब करना पड़ा है । देखो, कितनी जानें खतरे में हैं ।
और यह जानें उस समय तक खतरे में रहेंगी, जब तक तुम हमें अपने पिता के पास उनके घर न ले चलो । उन्होंने तुम्हारे नाम एक पत्र में लिखा है कि उन्हें पुर्खों का एक बडा खजाना और बहुत सा सोना मिला है । वह सोना हमें
और अगर मैं ऐसा न होने दूं तो ?
तो हम तुम्हारे साथ इन सब को भी मौत के घाट
देंगे । और किसी ना किसी तरह तुम्हारे पिता का
लगा लेंगे । सोना तो अब हमारे हाथ से नहीं बचेगा और न ही तुम्हारे पिता बचेंगे ।


हाँ, तुम चाहो तो हमें अपने पिता के पास ले जाकर इस खून की होली को रोक सकते हो।
पहले मैं दीवाली तो मना दूं तुम्हारी।
पवन कुमार को ताव आया तो उसने एक भरपूर मुक्का सरदार के मुह पर दे मारा।
इस हंगामे में एक डाकू ने चेलाराम पर गोली चला दी। पवन कुमार को बचाने के लिए सुमन बीच में आ गई।
पवन कुमार ने उसे सहारा देकर सम्भाला, तो पता चला पिस्तौल की गोली उसके कंधे से आरपार हो गई थी।
मुझे बचाने के लिए तुमने अपनी जान खतरे में डाल दी, यह तुमने क्या किया सुमन?
मझदारी से काम लो पवन। इन हथियार बन्द डाकुओं से गड़ा करना बेकार है। जैसे मैं इनके सामने बेबस थी, ऐसे अब तुम बेबस हो।
ओ छोकरे! तुझ से तो यह लड़की समझदार है। जब हम र्सी मारने की बात करते हैं, तो उसका मतलब गोली मारना ही होता है। इस बार तो तुम लड़की की हिम्मत से बचे हो और लड़की अपनी किस्मत से बची है, पर मारी हर गोली पर तुम्हारी किस्मत की मुहर नहीं लगी है। अब जो गोली चलेगी वह तुम्हारी छाती फाड़कर पार जाएगी।
पवन कुमार के सामने अब डाकुओं की बात मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं था।
चलिये, मैं आपको अपने पिता जी के पास लिए चलता हूं। अब इन सबको छोड़ दो।
अभी नहीं छोकरे इतनी कच्ची गोलियां
सोना और खजाना मिलने के बाद इन्हें छोड़ा जाएगा।
अभी यह यहीं बंधे रहेंगे।


यह मोटी नाक वाला अपने को डाक्टर कहता है। यह इस लड़की के घाव की मरहम पट्टी कर देगा। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और मेरे बाकी साथी यहां इनकी निगरानी करेंगे। इस लम्बे दांतों वाले लड़के ने अब तक अपना काम खूब निभाया है। यह भी हमारे साथ चलेगा। इस काम में भी यह लाभदायक सिद्ध हुआ तो हम इसे अपने गैंग में मिला लेंगे।
पवन कुमार अब रास्ता बता रहा था। और झांजर डाकू और चेलाराम उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।
एक बात सदा याद रखना। हमारे जासूसों का जाल फैला हुआ है। एक इशारे से हम अपना संदेश अपने सभी अड्डों पर पहुंचा सकते हैं। तुमने कभी भी जरा सी भी चालाकी की कोशिश की तो अपहरण किये लोगों में से एक को जीवित नहीं छोड़ा जाएगा।
लम्बे सफर के बाद वे ग्वालियर पहुंचे और कुमार ने अपने घर का दरवाजा खटखटाया……
कौन है ?
जैसा मैंने बताया वैसा करना।
कौन पवन ! अरे मैं कब से तेरी राह देख रहा हूं ! मेरा पत्र मिला था तुम्हें ?
हां मिला था पिताजी।
यह लोग कौन हैं ?
मेरे मित्र हैं।
आओ, अन्दर आजाओ।
सुनाओ, सेठ जुगल किशोर तो अच्छे हैं ? बेटी सुमन कैसी है ?
सब ठीक हैं।
गरीबी के कारण तुम्हें घर छोड़ना पड़ा। मैं तुम्हारे लिए आज तक कुछ न कर सका पर अब भगवान ने हमारी सुन ली है।
फिर अब देर किस बात की है ? बताओ सोना और खजाना कहां है ?
सोना और खजाना ?
हां यह लिखा था ना आपने पवन कुमार के पत्र में हम इसके मित्र हैं। अब भला हम से क्या पर्दा।




इन दीवानों से अगले सप्ताह फिर मिलना याद रखिये ।

आज जनता पार्टी के नेता ऐसी भांति-भांति की बोलियां बोल रहे हैं कि कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती पर···

# सवाल यह है ?

कि कान के मुहावरे का अर्थ जनता पार्टी के शब्दकोष में क्या है ?






अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवाल।

# खेल खेल में

**[कु]मार साहा—धनबाद**

प्र० : भारत के भूतपूर्व 'विकेट कीपर' [फ]ारूख इंजीनियर का टैस्ट रिकार्ड बतायें। [कै]च. स्ट. सर्वाधिक स्कोर, ) ?

उ० : ६६ कैच, १६ स्टम्प, २६११ [र]न तथा सर्वाधिक स्कोर १२१ इंग्लैंड के [वि]रुद्ध।

---

**[अ]शोक कुमार बंसल—आगरा**

प्र० : भारतीय गेंदबाज विशन सिंह [बे]दी क्या गिब्स से अधिक विकिट लेकर उस [क]ा रिकार्ड तोड़ सकेंगे?

उ० : कम से कम हमें तो यही उम्मीद [है]। २४६ विकटें बेदी ले ही चुके हैं अब गिब्स [त]क पहुंचने के लिए ६३ विकटें चाहिएं—[ब]ेदी एक ही सीरिज में २० से तीस तक [वि]कटें लेते हैं—इस हिसाब से पांच टैस्टों [क]ी श्रृंखला में वह और खेले तो भी वह [व]हां पहुंच जायेंगे हमारा तो ख्याल है कि [ब]ेदी अभी तीन क्या छः सात या इससे भी [अ]धिक श्रृंखलायें खेल सकेंगे।

---

**[अ]जीज लालानी—महाराष्ट्र**

प्र० : मदनलाल और घावरी इनका [टै]स्ट में सर्वाधिक स्कोर क्या है? और इन [म]ें फास्ट बौलर कौन सा है?

उ० : मदन का उच्चतम स्कोर ५५ [न]ॉट आउट और घावरी का ६४ है—घावरी [क]ी गति तेज है। परन्तु मदनलाल की [फ]ील्डिंग अति उत्तम है।

---

**ऐनुल हसन 'रोशन'—मुजफ्फर नगर**

प्र० : क्या भारत और पाकिस्तान हाकी में सर्व श्रेष्ठ हैं?

उ० : पाकिस्तान है। परन्तु भारत नहीं।

प्र० : पाकिस्तान और भारत के हाकी खिलाड़ियों के नाम क्रम से बतायें?

उ० : पाकिस्तानी टीम—

इस्लाउद्दीन (कप्तान), शाहनाज शेख, समीउल्लाह, अख्तर रसूल, सईद कमर, जमील, हनीफ, मही, शफीक, मुनव्वर, मंजूर एहसानुल्ला और सलीम शेखानी (गोल)।

भारत—

फिलिप्स, जफर, अशोक कुमार, करकेहा, वीरेन्द्र, क्लाडियस, लाकरा, सईदअली, बलदेव, भेंगरा, डुगडुग, ओलम्पियो फर्नाडीस और फ्रेडरिक्स।

(खेद है कि युवा खिलाड़ी क्लाडियस का विश्वकप खेलों के बाद लौट आने पर तीन दिन बाद स्कूटर पर जाते हुए एक ट्रक द्वारा कुचले जाने पर कलकत्ता में निधन हो गया।)

---

**जयप्रकाश अग्रवाल—कलकत्ता**

प्र० : गवास्कर ने अब तक अपने टैस्ट जीवन में कितने शतक बनाए व कब कहां और किसके विरुद्ध बनाए?

उ० : १४. शतक, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध ३, इंग्लैंड ३, वेस्टइंडीज ६ और न्यूजीलेंड २।

---

**सी. राजा 'मन्जू'—दुलियाजान**

प्र० : भारतीय हाकी टीम ने अब तक किस देश को सबसे ज्यादा गोलों से हराया है?

उ० : अमेरिका को २४ गोलों से

प्र० : क्या कोई पेशेवर खिलाड़ी ओलम्पिक खेलों में भाग ले सकता है?

उ० : नहीं।

प्र० : भारत का सबसे पहला क्रिकेट कप्तान कौन था?

उ० : सी० के० नायडू।

---

**विश्व बन्धु बाथपाल—रांची**

प्र० : विश्व में सबसे तेज गेंदबाज कौन हुआ है? कृपया उसका टेस्ट रिकोर्ड बतायें।

उ० : तेज गति के कई बॉलर हुए हैं। विकेटों के लिहाज से फ्रेडी ट्रूमैन सबसे आगे हैं उन्होंने ३०७ विकटें ली थीं।

---

**अशोक कुमार—इलाहबाद**

प्र० भारत के सुप्रसिद्ध आफ ब्रेक गेंद बाज इरापल्ली अन्नतर राव श्री निवासी प्रसन्न की लिखी हुई वन मोर ओवर किस भाषा में लिखी है। तथा उसके मंगवाने का पता बताने का कष्ट करें।

उ० : अंग्रेजी भाषा में लिखी है। सभी प्रमुख अंग्रेजी पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलती है।

---

**पप्पू—राज[illegible]**

प्र० : क्या अफ्रीका में क्रिकेट खेला जाता है, अगर खेला जाता है तो उनसे मैच क्यों नहीं होते?

उ० : दक्षिणी अफ्रीका खेलता है परन्तु वहां की सरकार की रंग भेद नीति के कारण दूसरे देश उसका बहिष्कार करते हैं।

---

**नरसिंह सांगली—बम्बई**

प्र० : सर गैरी सोबर्स का टैस्ट रिकार्ड बताइए?

उ० : सर गैरी सोबर्स ९३ टैस्ट, १६० पारियां, २१ नॉट आउट, कुल ८०३२ रन, ३६५ नॉट आउट सर्वाधिक स्कोर, २६ शतक।

प्र० : सर डनॉल्ड ब्रैडमन का टैस्ट रिकार्ड बताइये?

उ० : सर ब्रैडमैन, ५२ टैस्ट, ८० पारियां, १० नॉट आउट, ६९९६ कुल रन, ३३४ सर्वाधिक स्कोर व २९ शतक।

---

**संदीप के. गांधी—बम्बई**

प्र० : दुनिया में सबसे ज्यादा कैच किसने लिए हैं? और कितने लिए हैं? वह किस देश का है?

उ० : एमसी काउड्रे-१२१ कैच।

---

**राजगोपाल शर्मा—नारनोल, हरियाणा।**

प्र० : क्रिकेट में क्या एम्पायर का निर्णय अन्तिम निर्णय होता है?

उ० : हां!

---

**कु० जेड़ रानी—भागलपुर**

प्र० : विश्व प्रसिद्ध भारतीय गेंदबाज प्रसन्ना का टैस्ट रिकार्ड क्या है?

उ० : प्रसन्ना ने अब तक ४७ टैस्टों में १८७ विकटें ली हैं।

---

**अजय कुमार गुप्ता—तपकरा (म. प्र.)**

प्र० : भारत की क्रिकेट टीम का सर्वश्रेष्ठ आलराऊंडर कौन है?

उ० : घावरी।

---

**खेल-खेल में**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# वालीबाल कैसे खेलें

## भारत में वालीबाल की लोकप्रियता

वालीबाल के खेल का प्रारम्भ भारत में कब और कहां हुआ, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । आजकल वालीबाल का मुख्य केन्द्र देश की राजधानी दिल्ली में कहा जा सकता है । दिल्ली में वालीबाल का खेल दो प्रकार से खेला जाता है । अपनी सुगमता और अल्प साधनों से खेले जाने की विशिष्टता के कारण वह खेल यहां बहुत लोकप्रिय है । वालीबाल के दिल्ली में सैंकड़ों क्लब ही नहीं हैं, अपितु विद्यालयों में भी यह खेल छात्रों द्वारा बड़ी रुचि के साथ खेला जाता है ।

इस खेल को एक प्रकार की 'शूटिंग' कहते हैं और दूसरे को 'वाली' । 'शूटिंग' में खिलाड़ी अपने दोनों हाथों को बांध कर गेंद को सीधा वापस करने का प्रयत्न करता है । परन्तु 'वाली' में हाथों की अपेक्षा खिलाड़ी उंगलियों का अधिक प्रयोग करता है ।

खेलते समय एक खिलाड़ी उंगलियों के पाटों के सहारे अपने जाल के पास खड़े हुए साथी की तरफ वाल फेंकता है । दूसरा खिलाड़ी उसे अपने साथी की तरफ ऊंचा पास देता है और तीसरा खिलाड़ी, जो कद में आमतौर से लम्बा होता है । उछल-उछल कर 'वाली' अथवा 'स्मैश' लगाता है । या बड़ी होशियारी से गेंद को खाली जगह पर फेंक देता है ।

सोवियत रूस में भी यह खेल बहुत लोकप्रिय है । भारतीय टीम में जहां दो अथवा तीन खिलाड़ी 'वाली' लगाने वाले होते हैं, वहां सोवियत रूस की टीम में छः के छः खिलाड़ी ही 'वाली' लगाने की कला में निपुण होते हैं ।

यह स्पष्ट है कि जो खिलाड़ी वालीबाल की आयोजित बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के इच्छुक हैं, उन्हें दीर्घकालिक अभ्यास, उच्च प्रकार के प्रशिक्षण और लगनपूर्ण साधना की आवश्यकता होती है ।

वालीबाल खेल के एक अनुभवी प्रशिक्षत के मतानुसार इस खेल में जितनी टीम-भावना की जरूरत होती है, उतनी अन्य किसी खेल में नहीं होती ।

इस खेल में प्रत्येक खिलाड़ी को अपने खेलने के स्थान और दायित्व का पूरा ध्यान रहना चाहिए । खेलते समय खिलाड़ी को हर समय सतर्क रहना पड़ता है ।

वालीबाल में अच्छा सफल खिलाड़ी वही माना जाता है, जो इस बात का पूर्वानुमान लगा सके कि बाल कहां पर गिरने वाली है । निपुण खिलाड़ी उछल-कूद में नर्तक की भांति हो और गेंद को 'वाली' मारने में उसमें बाक्सर जैसी शक्ति होनी चाहिए ।

इसमें सन्देह नहीं कि भारत में वालीबाल खेल की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ रही है । इसकी प्रसार-गति ही भारत में इस खेल की प्रगति और लोकप्रियता को पूर्ण रूप से सिद्ध करती है ।

## वालीबाल का मैदान

वालीबाल का मैदान आयताकार होता है । बाहरी रेखाओं को मिलाकर मैदान ५९ फुट यानी १८ मीटर लम्बा और २९ फुट ६ इंच यानी ९ मीटर चौड़ा होता है ।

इस मैदान के बीचोंबीच लगभग ५सें० मी० चौड़ी एक मध्य रेखा खींची जाती है जो इस मैदान को दो भागों में विभक्त करती है । मध्य रेखा के दोनों ओर ३-३ मीटर की दूरी पर दोनों भागों में एक-एक प्रहार रेखा खींची जाती है ।

मध्य रेखा के ठीक ऊपर जाल खम्भों के सहारे लटका रहता है । इस प्रकार जाल द्वारा मैदान दो भागों में विभक्त हो जाता है ।

दोनों भागों के दाईं तरफ ३ मीटर यानी १० फुट का सेवा क्षेत्र होता है, जहां से गेंद की सर्विस की जाती है ।

खेल के मैदान का तल घास या मिट्टी अथवा लकड़ी का हो सकता है । मैदान समतल होना चाहिए ।

ध्यान रहे मैदान के आस-पास या लगभग ७-८ मीटर ऊंचाई तक किसी तरह के पेड़-पौधों अथवा खम्भों पर अन्य किसी तरह की रुकावट नहीं होना चाहिए ।

**जाल या नेट**

वालीबाल के लिए ९.५० मीटर यानि ३० फुट साढ़े दस इंच लम्बे जाल की आवश्यकता पड़ती है । यह जाल एक ... या ३ फुट ३ इंच चौड़ा होना चाहिए ।

जाली मजबूत रस्सी की बुनी होती है, जिसके किनारों पर कैनवास मजबूत कपड़े की चौड़ी पट्टी सिली होती ताकि जाल की मजबूती बनी रहे । ... में दोनों किनारों पर एक-एक लचीला ... बँधा होता है जो जाल को ताने रहता ... यह तार किनारे में सिली हुई पट्टी के ... रहता है ।

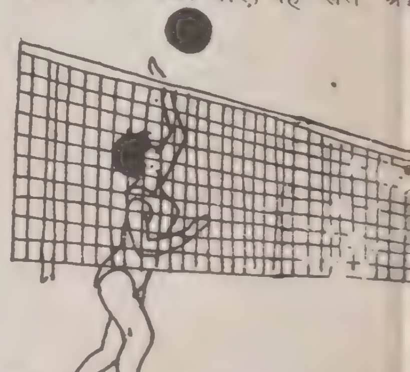
जाल के दोनों छोरों पर जाल ... चौड़ाई से बड़ा यानि हर मीटर ८० ... मी० लम्बाई का एक-एक एंटेना लगा ... है । एंटेना द्वारा गेंद के चिन्हक से ... होने का संकेत मिलता है ।

चिन्हक सफेद वस्तु की एक ५ ... मी० चौड़ी पट्टी होती है, जिसे आगे-... सरकाया जा सकता है । यह पट्टी जाल ... दोनों छोरों पर पार्श्व रेखा के बिल्कुल ... लगा दी जाती है ।

**जाल की ऊंचाई**

मैदान के दोनों भागों के बीच में इस जाल की जमीन से ऊँचाई पु... खिलाड़ियों के लिए ७.११ इंच होती ... है । और महिला खिलाड़ियों के लिए ७ ... ४ इंच निर्धारित होती है ।

जूनियर खिलाड़ियों के लिए जाल ... ऊँचाई कितनी रखी जाए, यह खेल अ...



...कारियों तथा निर्णायकों पर छोड़ दि... जाता है ।

जाल के दोनों सिरों की ऊंचाई दो... किनारों पर बराबर होनी चाहिए—इस ब... का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए । ज... को अच्छी तरह बांधना चाहिए ताकि या... गेंद इससे टकराये तो जाल ढीला न ... पाए और गेंद को वापस ठीक ढंग से फें... सके ।

क्रमशः


फैण्टम और
डायना की नौकरी
तारावीमो हवाई अड्डा···
बेवकूफ है ! हमारे ऊपर ही गिर रहा है !
दबोचने के लिए तैयार रहो !
हमारे आदमियों ने आखिर दबोच ही लिया जासूस को···
बड़ा असाधारण तरीका लगता है !
ओह ! ZZ
WHAM!
धड़ाम !
घूंसा !
आह !
ZZ
धड़ाम
हाय !
घूंसा
ओह···हाय मैं मरा !
न जाने उस पेराशूट के नीचे ये बेवकूफ क्या कर रहे हैं ?
उस जासूस को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं, चलो जल्दी से चलकर देखें !
देखो वह भाग गया !
रक्षकों ! भाग कर पकड़ लो उसे !
काफी अच्छा स्वागत हुआ है !
भाग्यशाली इनको अभी कुछ दिन और पिस्तौल चलाने का प्रयास करना चाहिये !
उस जीप में तो हमारे हथियार-बन्द दो सैनिक भी थे ?
गधो, उठो अब !
हैं ? यह तो बेहोश हैं !
इनके जबड़ों पर यह क्या अजीब निशान है ?
फैण्टम की निशानी।
आफिसर क्या तुम मुझे जनरल के महल का रास्ता बता सकते हो ?
सीधा चल कर, एक जेल छोड़ बस उसके बाद ही है।
सूचना ! एक भगोड़ा सैनिक जीप चोरी करके हाईवे रोड की तरफ भाग रहा है···
तुम ही हो !
कौन ? मैं
उसके पास हथियार भी हैं और खतरनाक भी है उसे शीघ्र रोको।
मेरे साथ बैठो और रास्ता बताओ···
ओह !




# गुमनाम है कोई ?

## प्रतियोगिता

इनाम 30 रु०

33



आपको यह बताना है कि राजकुमार और निरूपा राय के बीच में कौन सी तारिका खड़ी है और राजकुमार क्या दीवानी बात कह रहा है ?

---

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी. अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें - गुमनाम है कोई प्रतियोगिता ८ बं. बहादुर शाह जफर मार्ग नई दिल्ली-2। हमारे कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि — १५ जुलाई १९६७ — एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजें।

# क्यों और कैसे

**प्र० : नोबेल पुरस्कार क्या है ?**

उ० हर वर्ष नोबेल पुरस्कार विजेताओं का भारी मान सम्मान किया जाता है। उनसे मुलाकातें की जाती हैं तथा उनके जीवन तथा कार्य के बारे में लेख छपते हैं। ऐसा इस कारण होता है क्योंकि नोबेल पुरस्कार पाना एक महान् गौरव की बात है। ये पुरस्कार रसायनविज्ञान, भौतिकी, चिकित्सा शास्त्र तथा साहित्य के विशेष क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने पर प्रदान किया जाता है। एक विशेष पुरस्कार संसार में शांती स्थापना कार्य के विकास के लिए भी दिया जाता है।

नोबेल पुरस्कार के बारे में सबसे अनोखी बात ये है कि ये एक ऐसे व्यक्ति द्वारा शुरू किये गए थे जिन्होंने विनाशकारी क्षेत्र के विज्ञान के विकास में बहुत सहयोग दिया था। श्री एलफर्ड नोबेल सन १८३३ से १८९६ तक स्टोकहोम में जीवित रहे। इनकी खोज तथा पेटेन्ट की हुई वस्तुओं में सबसे उल्लेखनीय है 'डाईनामाइट', ब्लास्टिंग जिलेटीन (जो कि डाइनामाईट से भी अधिक विनाशकारी होता है) तथा बारूदों के लिये एक नये प्रकार का डयनेटर।

सम्भव है इतने विनाशकारी बारूदों को ईजाद के बाद श्री नोबेल के मन में संसार के लिए कोई उच्च कार्य करने की इच्छा पैदा हुई। वे शान्ती स्थापना के भी इच्छुक थे और युद्ध से बचाव के लिए उन्होंने एक प्लेन भी बनाया था। श्री नोबेल वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य के विकास के लिये विज्ञान तथा साहित्य दो महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

अपने मरने पर श्री नोबेल ९,०००,००० डालर की एक बड़ी धनराशि छोड़ गये थे। ये राशि रसायन विज्ञान, भौतिक, चिकित्सा विज्ञान तथा साहित्य के विकास के प्रयास में महत्वपूर्ण कार्य करने वालों को पुरस्कार प्रदान करने के काम में ली जाती है। हर पुरस्कार औसतन ४०,००० डालर का होता है। इसके अन्तर्गत विश्व शांति स्थापना के प्रयास कार्य के लिए एक विशेष पुरस्कार प्रदान किया जाता है प्रथम नोबेल पुरस्कार १० दिसम्बर सन् १९०१ पर श्री नोबेल की पुण्यतिथि पर प्रदान किया गया था।

श्री नोबेल स्वीडन के थे इसलिये ये पुरस्कार स्वीडन की नोबेल फॉउडेशन द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं। इन पुरस्कारों के पाने वालों का निर्णय करने के लिये कई संस्थाए भाग लेती हैं। जो हैं भौतिकी तथा रसायन शास्त्र का पुरस्कार रोयल अकादमी आफ साँइस स्टाकहोम, चिकित्सा विज्ञान का केरोलीन इन्सटीट्यूट आफ स्टाकहोम, साहित्य के लिए स्वीडिश अकादमी आफ लिटरेचर तथा शान्ती पुरस्कार नोर्वजियन पार्लियामेंट द्वारा चुनी गई पांच व्यक्तियों की कमेटी द्वारा निर्णित होता है। संसार के कई महान व्यक्तियों को ये पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं जिनमें विशेष उल्लेखनीय हैं, श्री थ्योडोर रूजेवेल्ट, एलबर्ट आइन्सटाइन, बरनर्ड शॉ, मेरीक्यूरी, रुडयार्ड किपलिंग अरनैस्ट हैमिंगवे तथा श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर।

---

**प्र० : उत्तल लेंस परावर्तन कर के प्रकाश की किरणों का एक बिन्दु पर क्यों मिला देता है ? जबकि अवतल लेंस परावर्तित किरणों को फैला देता है :**

उ० : कहते हैं कि आविष्कार प्रगति की जननी है। विज्ञान के नित नये आविष्कार मनुष्य के रहन-सहन, आचार व्यवहार इत्यादि में सुन्दरता लाते रहते हैं। विज्ञान ही एक ऐसा कारण है जिस वजह से आज का मनुष्य प्राचीन काल के मनुष्य की तुलना में अधिक सभ्य बन गया है। आज की मानव जाति को सभ्य बनाने में लेंसों का उपयोग भी महत्वपूर्ण है। यह भी विज्ञान की ही देन है। लेंसों का प्रयोग साधारण दूरबीन से लेकर टैलीस्कोप तक, कैमरे से लेकर फिल्म दिखाने के प्रोजक्टर तथा अल्प दृष्टि वाले मनुष्यों को स्पष्ट दृष्टि देने के लिये चश्मों के रूप में भी किया जाता है। यहां तक कि पावर स्टेशनों के संचालन हेतु आवश्यक ऊर्जा को सूर्य की गरमी से लेंसों की सहायता से प्राप्त किया जाता है। इन सब में भिन्न-भिन्न लेंसों को भिन्न-भिन्न प्रकार से उपयोग कर विभिन्न उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। यदि वास्तव में देखा जाए तो लैंस दो ही प्रकार के होते हैं। एक तो उत्तल लैंस (Roniex Lense) तथा दूसरा अवतल लैंस (Concave Lense)। प्राथमिक दृष्टि से देखा जाए तो लेंस बहुत छोटे छोटे प्रिज्मों से मिलकर बनता है। परन्तु यहां पर सुविधा की दृष्टि से केवल दो प्रिज्मों को मिलाकर ही एक लेंस का निर्माण माना जायेगा। यदि एक प्रिज्म को देखा जाए तो ज्ञात होता है कि वह किसी आपाती प्रकाश की किरण को परावर्तित कर अपने आधार की ओर झुका देता है। यह झुकाव प्रिज्म के तलों के कोणीय झुकाव पर निर्भर करता है। प्रिज्म के इस आन्तरिक गुण के कारण ही लेंस को अपना गुण देता है। इस प्रकार यदि दो प्रिज्मों के आधारों को मिला दिया जाए तो उत्तल लेंस की रचना होती है। इस प्रकार जब आपाति किरण प्रथम प्रिज्म से परावर्तित होती है तो वह प्रिज्म के आधार की ओर झुक जाती है। इसी प्रकार जब आपाति किरण प्रिज्म न० २ से गुजरती है तो वह भी अपने आधार की ओर (ऊपर को) झुक जाती है। परन्तु वह प्रकाश की किरण जो दोनों प्रिज्मों के आधार से गुजरती है वह परावर्तन के पश्चात् भी सीधे ही अपने मार्ग पर चली जाती है। इस प्रकार आपाति किरणें परावर्तन के उपरान्त एक दूसरे को जहाँ पर मिलती हैं वह उस लेंस का फोकस बिन्दु (Focal Point) तथा जो किरण प्रिज्मों के आधारों से गुजर कर सीधे ही अपने मार्ग पर चली जाती है उसे उस लैंस का मुख्य अक्ष (Main axis) कहते हैं। इस प्रकार जब दो प्रिज्मों के आधारों को मिलाया जाता है तो उत्तल लेंस बनता है, यदि दो प्रिज्मों के शीर्षों को मिला दिया जाय तो अवतल लेंस बनता है। इसमें प्रकाश की किरणें परावर्तन के पश्चात फैल जाती हैं तथा इस लेंस का फोकस बिन्दु उसी ओर होता है जिस ओर से आपाति किरणें आती हैं। इस प्रकार लेंसों की रचना होती है और वे परावर्तन के पश्चात एक बिन्दु पर मिलती अथवा फैलती है। वास्तविक रूप से जब लेंसों को देखा जाय तो लेंस में प्रिज्म नाम की कोई भी चीज नहीं दिखायी देती है। इसका कारण यह है कि कांच के लेंसों को आवश्यकतानुसार निश्चित त्रिज्या वाले वृत्त के अनुरूप घिस लिया जाता है, जो लैंस की पावर कहलाती है और लेंस प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

**सुशील त्रिवेदी—तल्लीताल**

# मसूरी-नैनीताल को बचाओ

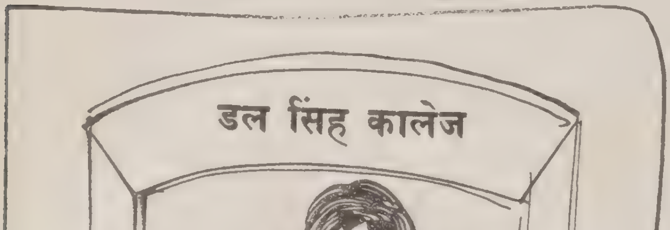
इस वर्ष मसूरी व नैनीताल में पूर्ण नशाबन्दी लागू होने के कारण कहा जाता है कि टूरिस्ट यातायात कम हो गया है। यह दो हिल स्टेशन तो टूरिस्टों पर ही जिन्दा हैं और टूरिस्ट हिल स्टेशनों पर मौज-मस्ती मनाने ही जाते हैं। लोगो को डर है कि कुछ ही वर्षों में यह दो हिल स्टेशन खंडहर बन जायेंगे। इन हिल स्टेशनों को बचाने के हम दीवा उपाय बता रहे हैं। इन उपायों से लोगों को यहां जाने पर मजबूर किया जा सकता है।




जनता पार्टी अपने अगले चुनाव के टिकट उन्हीं को दे जो मसूरी व नैनीताल हर साल जाते रहे हैं।



इन दो हिल स्टेशनों पर जाने वाली लड़कियों को एक विशेषाधिकार दिया जाये। उनका कुत्ता किसी को काट खाये तो एक बार काट खाने पर मुकदमा नहीं चलेगा




गर्मियों में नैनीताल-मसूरी हो आये विद्यार्थियों को कालेजों में प्रवेश के समय प्राथमिकता दी जाये।



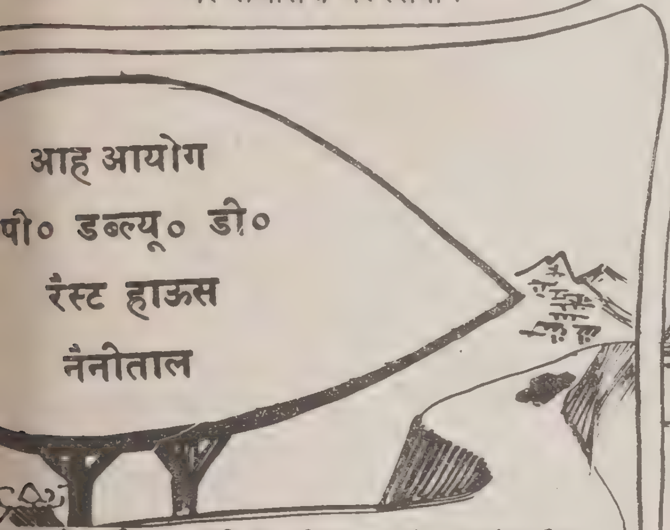
बाल-बच्चों सहित इन दो हिल स्टेशन जाने वाले बाबुओं की अर्जी सबसे पहले मंज़ूर की जाये।



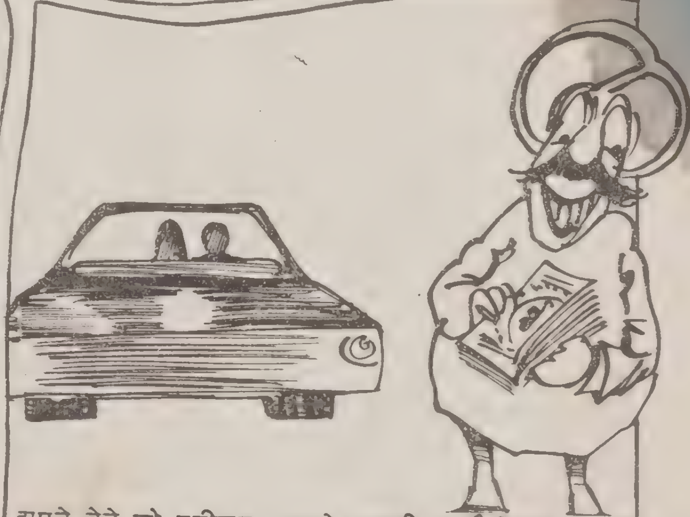
द्रीनाथ मन्दिर या जम्मू के पास वाली जय माता दी के न्दिर शिफ्ट करके मसूरी, नैनीताल की पहाड़ियों पर साये जायें। श्रद्धालु जनता इन हिल स्टेशनों को वर्ष भर खचाखच भरे रखेगी।



इन दो जगहों पर क्रिकेट टैस्ट मैचों का आयोजन हो और कमेंट्री प्रसारित न की जाये। लोग टूट पड़ेंगे।




रकार ने इन्दिरा गांधी के खिलाफ जो आयोग बिठा ये हैं उनकी सुनवाई मसूरी या नैनीताल में हो। जहां न्दिरा गांधी जायेगी वहां उनके समर्थकों की भीड़ तो जायेगी ही।



अपने बेटे को हनीमून मनाने मसूरी या नैनीताल भेजने वाले पिताओं को दहेज लेने की कानूनी छूट दी जाये।




सूरी-नैनीताल के चक्कर लगा आये बेकारों की यह एक ी योग्यता मानी जानी चाहिए, जैसे डाक्टर लन्दन टर्न की योग्यता होती है। नौकरी आसानी से मिले।




मसूरी, नैनीताल जाने वालों को एक छूट और देनी चाहिए वे एक महीना लेट तक अपना टैक्स रिटर्न फार्म दे सकें। रेडियो लायसेंस लेट होने पर भी उन्हें लेट फी की पैनल्टी से मुक्त रखा जाये।

# सत्रहवीं कला: लोकप्रियता

**इन्दु जैन**

ज़माना नारेबाजी और घेराव का है। वातावरण में खास जहर घुला जान पड़ता है और हर नज़र शक के पैने तीर सधाये हरदम तैयार तैनात दिखाई देती है। वर्गों की लड़ाई है, गरीब की अमीर से ठनाठनी है, विद्यार्थी की सारी दुनिया से तकरार है। हर कुर्सी वाले से बाहर वाले की तू-तू-मैं-मैं है। जब जमाना अच्छा था यानी जब [illegible] की बहस इतनी ऊंची आवाज में [illegible] हुई नहीं थी उस वक्त भी कहानी वाले बाप-बेटे सबको खुश न कर सके—न गदहे पर चढ़कर, न उससे उतरकर और न उसे अपने कंधे पर ही चढ़ाकर। फिर भला आज के इंसान की तो बिसात ही क्या है? वह क्या खा कर लोकप्रिय बनने का दावा कर सकता है?

लेकिन मनुष्य की एक बहुत पुरानी आदत है। उसी आदत ने उसे [illegible] जीतने को मजबूर किया, असाध्य रोगों का इलाज खोज निकलवाया, परमाणु की शक्ति पहचनवा दी और हाँ, दो भयंकर महायुद्ध भी करवा दिये। वह आदत है—चुनौती स्वीकार करने की! काम जितना मुश्किल होता है, उसका साहस भी उतना ही बड़ा हो जाता है। इस आदत के मुताबिक आज विरोध जितने पनप रहे हैं, आलोचना जितनी स्वच्छंद, कुछ और पैनी होती जा रही है, इंसान की लोकप्रियता की हविस उतनी ही तीव्र होती जा रही है। जितने लोग हैं, उतने ही लोकप्रिय बनने के लटके हैं, उतने ही विविध नुस्खे और अनगिनत शस्त्र-अस्त्र हैं।

कुछ वर्षों पहले एक अत्यंत समृद्ध व लोकप्रिय देश के एक लेखक ने कुछ पुस्तकें निकालीं। दोस्ती गाँठने की अचूक तरकीबें उसमें थीं। दुनिया में धूम मच गयी और लेखक की सूझबूझ उसे रातों-रात मालामाल कर गयी। जहां देखिए, उन्हीं किताबों की चर्चा उन्हीं तरकीबों की आजमायश। धूम-धड़ाका शांत होने के बाद कुछ खतरे ऊपर उभरे। एक दिन सहेली ने प्रशंसा की तो जबान से निकल गया, 'अच्छा, तो तुम भी कारनेगी साहब की चेली हो गयी!' सखी पहले तो अचकचा गयी और फिर जब अपनी मुक्त-हृदय प्रशंसा पर हमारी शक की नजर पहचानी तो नाराज होकर बोल-चाल बंद कर दी।

सच तो यह है कि लोकप्रिय बनना पूरे अर्थों में एक कला है। बेहद नाजुक, बड़ी नखरीली और जैसे किसी भी कला में सिद्ध-हस्त बनने के लिए बरसों परिश्रम करना पड़ता है उसी तरह इसकी बारीकियाँ भी जिंदगी भर सीखते चले जा सकते हैं। इस कला पर अधिकार प्राप्त करने के लिए भी उतने ही संयम और तपस्या की जरूरत है, जितनी नृत्य विशारद या संगीत-शरोमणि बनने के लिए। बल्कि उन कलाओं का अभ्यास तो आप लगे-बंधे समय में कर लेते हैं और फिर घुंघरू उतार कर रख देते हैं तान-पूरे पर खोल चढ़ाकर कोने में खड़ा कर देते हैं, लेकिन एक बार लोकप्रियता की कला का भूत सवार हुआ, तो आठों पहर उसका रियाज़ चलाता रहना है। सोते-जागते, उठते बैठते हर पल इसकी आराधना करना पड़ती है। तब जाकर कहीं देवी चरण छूने की इजाजत देती है।

इस कला को सीखने का सबसे पहला पाठ है—त्याग। रविवार का दिन है! आप सुबह से काम में जुटी रही हैं, घर के जाले झड़वाये हैं, रसोई में जाकर पति-परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए विशिष्ट प्रसाद छौंका है, नौकरों की करुण-कथा पर सहानुभूति से कान दिया है, पड़ोसिन की बिटिया को बिठाकर उसे अपनी ज्ञान-राशि का दान देकर उपकृत किया है।

एक छुट्टी का दिन था, सो आप एड़ियां रगड़-रगड़ कर, आंवले से बाल धो कर नहायी हैं। हफ्तों से छूटा उपन्यास उठाकर एक करवट लेटी ही हैं कि अचानक आपकी दूरदराज की, निहायत बोर कोई मिलनेवाली आ गयी, जिन्हें देखकर आपकी रूह फ़ना होती है। आपकी परीक्षा का समय आ गया। यदि आप आंख बंद करके चुप्पी लगाकर पड़ गयीं और नौकर को यह कह कर उन्हें विदा करने पर मजबूर कर दिया कि 'बीवीजी तो सो रही हैं।' आप लोकप्रियता की पहली सीढ़ी पर [illegible] पड़ीं। लेकिन अगर आप [illegible] उठ बैठीं, अपने हाथ से चाय बना [illegible] अनुरोध करने लगीं और [illegible] पर सारी दोपहर हँसते-हँसते [illegible] त्याग कर पायीं, तो जान लीजिए, [illegible] मिट्टी की बनी हैं ठीक रास्ते पर [illegible] हैं। महिला समाज में आपके गुण[illegible] चर्चे फैल कर रहेंगे।

एक बार हमने भी कोशिश [illegible] नुस्खा आजमाने की। हंस-मुस्करा[illegible] लेकिन बात करते करते अचानक [illegible] की जम्हाई आ गयी और चाय [illegible] दी, पर सामने मेज पर रखा मि[illegible] डिब्बा खोलकर पेश करना ही याद [illegible] इसके अलावा एक और चूक हो गय[illegible] करते समय बराबर पास में पड़ी प[illegible] पन्ने उलटती रही न खुदा ही [illegible] विसाले सनम, न इधर के रहे न [illegible] नींद तो उस दोपहर नहीं ही मिली [illegible] के स्थान पर भी बदनामी ही पायी [illegible] अपने आपको क्या समझती है!' [illegible] जैसे सिर्फ रंग घोल लेने और [illegible] रेखाएं खींच लेने से ही कोई चित्रक[illegible] बन जाता, उसी तरह सिर्फ चेष्टा [illegible] से लोकप्रियता हासिल नहीं हो जात[illegible] तन और मन दोनों रमाने पड़ते हैं [illegible]

त्याग की सीढ़ी चढ़ने के [illegible] आता है, मीठे वचन का। मधुर [illegible] बिना दूसरे को जीतने का कोई उप[illegible] झूठ बोलना पड़े, अप्रिय होना तो [illegible] दूसरे का: बात के अर्थ [illegible] न कहिए। यह बात हम [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] अपने बारे में सच सुनना अच्छा नहीं [illegible] वह जिस भ्रम-जाल में [illegible] सच बोल कर [illegible] आप [illegible] माफ नहीं करेगा! [illegible] नाता ही तोड़ लें? [illegible] इतना अवश्य कीजिए कि [illegible] बोलिए जो मधुर हो। [illegible] लगा जाइए। इसके लिए [illegible] बनना पड़ेगा। कभी-कभी [illegible] जाती है जब अप्रिय सत्य कहे बिना [illegible] होता नहीं दीखता। उस समय ऐसे[illegible] कहनी सीखिए जिसमें न 'हाँ' न [illegible] 'अच्छा' कहिए न 'बुरा'। अक्सर[illegible]

त्व को अपने ऊपर से टाल देने से भी
निकल जाता है।

कूटनीति का ज्ञान लोकप्रिय व्यक्ति को
य होना चाहिए। वही व्यक्ति सबकी
ों का तारा बन पाता है, जो हर समय
ों की मदद करने को तैयार हो। लेकिन
च ही अगर वह दुनिया की सहायता के
में जुट जाये तो उसे सांस लेने का भी
ाश न मिले और या तो लोकप्रियता
इच्छा को गोली मार वह नितांत
तवादी और स्वार्थी हो जायेगा या फिर
साधू बन लोक सेवा करता हुआ अपने
र को तिलांजलि दे बैठेगा। लेकिन
लोकप्रिय कलाविद्ध वह है, जो हर
को यह भरोसा दिलाये रहे कि वक्त
पर वह सहायता देने को पूरी तरह
है, लेकिन जब सचमुच वक्त पड़े, तो
समय आसपास कहीं नजर ही न आये।
रह विश्वास भी बना रहेगा और मदद
की जहमत भी न उठानी पड़ेगी। इसे
ौर कब किया जाय, यह सिखाने से
ाना। अक्लमंद लोग एक ऐसी दिव्य
अपने अन्दर जगा लेते हैं कि दूसरे पर
नी विपत्ति को दूर से ही ताड़ लेते
र्योंकि खुद उस इंसान को पता नहीं
कि उसकी ओर आफत चली आ रही
किन हां, कभी-कभी कुछ मदद-कार्य
करते रहना चाहिए, वरना एक बार
प्रतिष्ठा हाथ से निकल गयी या असलियत खुल गयी, तो लाख कोशिश करने पर भी दुबारा हाथ नहीं आयेगी।

कूटनीतिज्ञ का एक बहुत बड़ा हथियार है—विनम्रता। आप भीतर से जानते हैं कि आप समर्थ हैं, बहुत कुछ कर सकते हैं, दूसरे भी इस तथ्य से भली-भाँति परिचित हैं वरना सहायता पाने वे आप ही के पास क्यों दौड़े चले आते लेकिन आप उनके सामने अत्यन्त विनम्र बने रहिए। इसकी शिक्षा हमें हर मंच से मिलती है। स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय के मंच से लेकर दुनिया की हस्तियां जहाँ जुड़ती हैं, उस मंच के सारे वक्ता, अतिथि और अभ्यागत नत-मस्तक होकर कहते सुने जाते हैं कि वे अनुगृहीत हैं, कि उन्हें यह मान बक्शा गया। वे जो कुछ हैं औरों की बदौलत हैं, उनके प्यार और सद्‌भावना की नींव पर अपने व्यक्तित्व का महल उठा पाये हैं



वगैरह-वगैरह। इस तरह की बातें यदि आप नहीं कहेंगे तो आपकी महानता को कोई माफ नहीं कर पायेगा।

कूटनीति के साथ मनोविज्ञान का गहरा अध्ययन भी जरूरी है। किसकी क्या रुचि है, कौन कब सुनना चाहता है, कौन कब कहना चाहता है, किसे कविता की भाषा पसंद है, कौन साफगोई का दीवाना है, कौन किस राजनीतिक मान्यता की हामी भरता है, किससे लड़ाई है, किस की किससे ठीन-काटी रोटी है। तमाम सारी बातें जाननी जरूरी हैं, वरना हमें कौन पूछेगा? यह भूलना भी जरूरी है कि हम क्या सोचते हैं और क्या चाहते हैं। एक स्वार्थ-सिद्धि के लिए पूरी तरह निस्वार्थ बनना पड़ जाता है।

वैसे, आप यह न समझें कि लोकप्रियता एक निषेधात्मक गुण ही है, इसका उजाला पक्ष है ही नहीं। अब तक हमने उन्हीं की बातें की हैं जो इसे कला की तरह साधना और प्राप्त करना चाहते हैं। अक्सर यह भी देखने में आया है कि जो लोगों की राय की जरा भी परवाह नहीं करता वही सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो जाता है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। गांधी, नेहरू, कैनेडी, नासेर, माओत्से तुंग—इनकी मृत्यु पर करोड़ों ने आँसू बहाकर इनकी लोकप्रियता सिद्ध की। आकर्षक व्यक्तित्व, उदात्त चरित्र निर्भीकता, गरिमा—ये सारे गुण अनायास ही मन मोह लेते हैं। जब कोई व्यक्ति स्वार्थहीन होकर इतने महत् कार्य में लग जाता है कि उसकी रोशनी हमारे अन्धेरे कमरों को भी चमका जाती है तो हम खुद-ब-खुद उसके सामने झुक जाते हैं, उसे बहुत अपने की तरह प्यार करने लगते हैं। इनकी लोकप्रियता न सस्ती होती है और न स्वार्थपूर्ण। या फिर लोकप्रिय होते हैं चलचित्रों के अभिनेता, जो यौवन और सौन्दर्य के हमारे सपनों को अपने व्यक्तित्व और अभिनय से साकार कर देते हैं। प्रशंसा ईर्ष्या, आकर्षण का यह मिला-जुला भाव जो लोकप्रियता के रूप में हमारे सामने आता है—किसी समय कवि बायरन के लिए जनता में जोश जागा था जब उसकी अनुकृति में युवक लंगड़ाकर चलना फैशन बना बैठे थे और लड़कियां उसकी बग्घी के पीछे भागती चली जाती थीं।

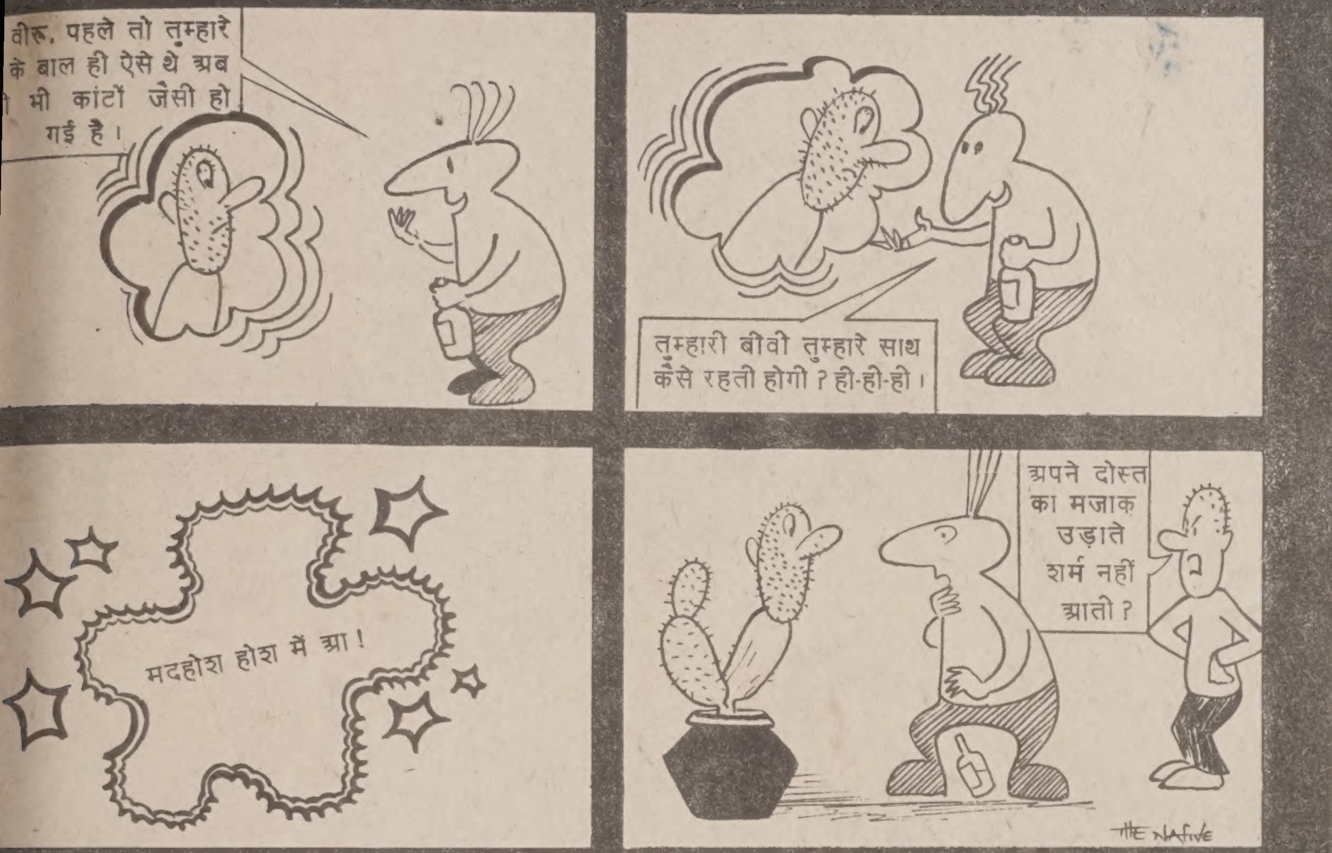
जिसके चक्कर में दुनिया की तारीफ पाने के लिए अपनी असलियत को छिपाना पड़े, अपनी हस्ती को ओछा बनाना पड़े और ईमानदारी पर चालाकी का मुलम्मा चढ़ाना पड़े, वह जनप्रियता एक रोग है, एक बुखार जिसके सन्निपात से मति भ्रष्ट हो जाती है, व्यक्तित्व दुर्बल बन जाता है। इसलिए आखिर में बस यही कहूँगी:

'न रास्ते में फूल हों, न सिजदा-ज़दा सर
मिला सकूँ मैं खुद से नजर वह हुनर सिखा'●



कितनी नाइन्साफी की है खुदा ने मेरे साथ ? यह अजीब सी चौंच लगा दी मेरे । मेरी इस बेढंगी चौंच के कारण ही आदमी ने मेरा नाम शूबिल रखा यानि जूते जैसी चौंच वाला ।
और दूसरे पंछियों को खुदा ने छोटी कैसी सुडौल और प्यारी- चौंचें दी हैं ।
इस अन्याय के खिलाफ मुझे आवाज उठानी चाहिये ।
मैं अनन्त काल तक इसी तरह एक टांग पर खड़े होकर तपस्या करूंगा । भगवान को आखिर मेरी तपस्या के आगे झुकना पड़ेगा और मुझे भी छोटी सुडौल चौंच देनी होगी ।
वरदान
जाओ, मैंने तुम्हारी मांग स्वीकार कर ली वत्स ! तुम्हारी इस बेडौल चौंच की जगह सुन्दर चौंच दे दी मैंने ! तथास्तु !
पंचतंत्र
हा, हा ! अब मजा आ गया जीने का । अब कोई जानवर मेरी चौंच को देख फब्ती नहीं कस सकेगा ।
क्या बात हो गई भई, जब से तुमने चौंच बदली है तुम दिनों दिन पतले होते जा रहे हो ?
छोटी चौंच के कारण मैं छोटी-छो मछलियां ही खा पाता हूँ । पेट ब है, सदा भूखा ही रह जाता हूं । पत नहीं हूंगा तो और क्या होगा ?
शिक्षा—बड़े गोदाम का दरवाजा भी बड़ ही होना चाहिए चाहे देखने में भद्दा लगे । सुन्दर पागलपन में फँसी दरवाजा लगाने पर माल अन्दर नहीं सकेगा । गोदाम खाली रहेगा, आमदनी पतली हो जा

# मदहोश




# परिणाम

अंक नं० १8 में प्रकाशित रंग भरो का परिणाम

उर्वशी स्वरूप
10196/7 झन्डेवाला मन्दिर
नई दिल्ली

मोहम्मद अतीक
सिद्धबली रोड, कोटद्वार
(गढ़वाल)

आर० एस० भाटिया,
398/2 टेलरज स्ट्रीट,
पटियाला

अंक नं० १९ में प्रकाशित रंग भरो का परिणाम

विनोद कुमार भाटिया
171/1, आनंद पुरी
मेरठ-2

2. संजीव कुमार
मकान नं० 926 सै०.6
आर० के० पुरम, नई दिल्ली

3. आशा रानी सहदेव
F/23 विष्णु गार्डन
नई दिल्ली

अंक नं० २० मे प्रकाशित हुई गुमनाम प्रतियोगिता का परिणाम

मीना टी, अंजना और जयश्री टी,

विजेता कोई नहीं —

शेर-कविता प्रतियोगिता
किसी भी पाठक ने तुक की बात नहीं लिखी
विजेता कोई नहीं —

## पाठकों के लिए एक नया

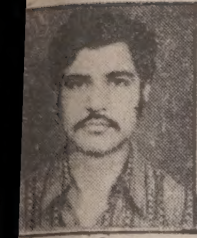
# शगूफा

आप-हम अपने आसपास मित्रों में, अपने रिश्तेदारों में कई ऐसी शक्लें पाते हैं जो अभिनेता-अभिनेत्रियों से काफी हद तक और कई बार हूबहू मिलती हैं। यदि आपके रिश्तेदारों-मित्रों में ऐसा कोई व्यक्ति है तो आप उसकी फोटो हमें भेजें। हम फिल्म स्टार के चित्र वाले पेज के सामने उसे छापने का प्रयत्न करेंगे। संक्षिप्त परिचय भी भेजें। हमारा प्रयत्न यही होगा कि जिस स्टार का चित्र अन्तिम पेज पर होगा। उसी के हम-शक्ल का सामने वाले पेज में हो।

**फोटो भेजने का पता**

दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


बच्चा जमूरा
मेरी कितनी गर्लफ्रैंडज़ पिकनिक मना रही हैं. तुम क्या जानों, यह मेरा कितना ख़्याल रखती हैं!
जब किसी की ज़ुल्फ़ें मेरे कंधे पर हों तब मेरी फ़ोटो खींचना
वह देखो! उस बैंच के पीछे एक गर्लफ्रेंड पोनीटेल नज़र आ रही
देख नहीं रहे हो. अंधे हो गये हो क्या? कंधे पर ज़ुल्फ़ें फैल गई हैं. अब फ़ोटो खींचो!



सुनील कुमार, बी-२३, लाजपत नगर, II नई दिल्ली, २१ वर्ष, तैरना, पढ़ना, अपने से बड़ों का आदर करना, खुश रहना।



पवन कुमार वाषर्णेय 'प्रीतम' पवन ट्रेडिंग कम्पनी, कटरा चौक, अलीगढ़, १७ वर्ष, कम फिल्में देखना, पढ़ना, दोस्तों से काम निकलवाना।



जगजीत सिंह राणा, २५५६ त्रिनगर, दिल्ली-३५, १८ वर्ष, कार्टून बनाना, दूसरों से पागलपन की बात बनाना तथा पागल बनना।



अशोक आनन्द गुप्ता, गरखा बाजार, छपरा, बिहार, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, नये शहरों का भ्रमण करना, हंसना-हंसाना।



देवी दयाल सेठी, नजदीक घण्टा घर, १८ वर्ष, डाक टिकट संग्रह, पढ़ना, फिल्में देखना, दिन में दो बार कपड़े बदलना।



सुभाषचन्द्र शुक्ला पुत्र श्री बाबूराम शुक्ला, गाड़े मो० धानसिंह बजरिया, पीलीभीत, १७ वर्ष, पढ़ना, काम करना, फोटो एकत्र करना।



सुव्रत कुमार ठाकुर, क्वाटर नं० ६ 'ग' सड़क नं० ८, सेक्टर ४, भिलाई (म० प्र०), १४ वर्ष, हवाई जहाज बनाकर उड़ाना।



सुखचरन सिंह 'बेदी' ५६/डी. धनाथ नाथ देब लाइन, कलकत्ता-३७, १७ वर्ष, धर्मेन्द्र, अमिताभ बच्चन की फिल्में देखना।



रमेश कुमार सेंतिया, ६ कलक्टर गंज; हापुड़, १८ वर्ष, किसी की दर्द भरी कहानी सुनकर उसको सहारा देना और पढ़ना।



मंजय कुमार जैन हरदो, श्री अमृत लाल जैन, ८६ गद्दीपुरा, जैन मन्दिर के पीछे, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, डाक टिकट संग्रह करना।



राकेश कुमार गुप्ता, ए ७ ए/११, राणा प्रताप बाग दिल्ली, १४ वर्ष, नावल पढ़ना, दोस्ती बढ़ाना, सबसे प्यार से बातें करना।



मो० अशरफ अली खां हरनाहा टोला, लोदी कटरा पटना सिटी, १८ वर्ष, कार्टून बनाना, पढ़ना, बड़ों की इज्जत करना।



हरि प्रसाद शर्मा IX बी० श्री रघनाथ राय जाजोदीया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मुकुन्दगढ़, १५ वर्ष, चुटकले पढ़ना व सुनना।



ओमप्रकाश माहेश्वरी, घी मंडी, नया बाजार, चार भुजा की गली, तोपनीवाल भवन, अजमेर (राज०), १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



राकेश वर्मा, ५११/५ महरौली, नई दिल्ली, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, सबके साथ भलाई करना और खुद कष्ट उठाना।



रविन्द्र पाल सिंह भाटिया, १२६/४, घास मण्डी, पटियाला, १७ वर्ष, कहानियां पढ़ना, चुटकले पढ़ना, खेलों में भाग लेना।



अशोक कुमार कटेजा, प्रेम दवाखाना गांधी जी की पुल, कोटा (राज०), १७ वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना, दारासिंह की फिल्में देखना।



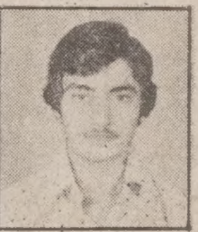
अशोक कुमार अग्रवाल, मुरारी लाल राधेश्याम, औ० एच० रोड, फारबिस गंज (बिहार), १८ वर्ष, युवकों से मित्रता करना।



कुलजीत सिंह स्याल, B-IV/४३७, जंडा वाला रोड, बरनाला, (पंजाब), १५ वर्ष, रेल गाड़ी को एक हाथ से रोकना, गप्पें मारना।



मुकेश चड्ढा, ८० ए०-१ माडल टाउन, दिल्ली-६, २० वर्ष, पढ़ना, पड़ौसियों के साथ अच्छा व्यवहार करना, बच्चों से प्यार करना।



विनोद साहनी, ३५-के०/१०, रामपुर बाग बरेली, १५ वर्ष, फोटोग्राफी करना, खेलों में दिलचस्पी लेना, पढ़ना और व्यायाम करना।



सुरेश कुमार कौशिक, ५६७ चिराग दिल्ली, नई दिल्ली-१७ २७ वर्ष, फिल्मी रिकार्ड सुनना, दोस्ती बनाना, अच्छे बनने की कोशिश करना।



सुनील कुमार, हिम्मत सिंह का दुमका, १८ वर्ष, टिकट जमा करना, दोस्ती करना, पढ़ना, शाम को नदी किनारे घूमना।



कुमार बंसल, श्री बंसल, कापस्था स्ट्रीट पुर, १६ वर्ष, पढ़ना, खेलना, मित्रता करना और साथ देना।



सुरेश कुमार न्याती नवीन द्वारा बी० एल० न्याती, पोस्ट बस्सी, जिला चित्तौड़ (राज०), १६ वर्ष, दोस्ती करना, नावल पढ़ना।



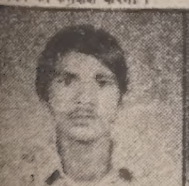
मनोज कुमार शर्मा द्वारा श्री कृपा शंकर शर्मा, सिविल लाइन्स, सतना (म० प्र०), १६ वर्ष, पुस्तकें पढ़ना और क्रिकेट खेलना।



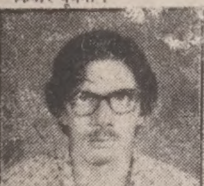
असीम कुमार, ५४८, राजेन्द्र नगर, लखनऊ, १४ वर्ष, गिटार बजाना, स्केटिंग करना, किताबें पढ़ना, कहानियां सुनना और दूसरों को सुनाना।



राजीव ढल, डी० के० फार्मा (इण्डिया) प्रिंस रोड, मुरादाबाद (यू० पी०), १४ वर्ष, कार्टून बनाना, अपने को होशियार समझना।



सुनील कुमार अरोड़ा, ६८ सी० देवपुरी मेरठ, १७ वर्ष घूमना, सी० आई० डी० करना, पढ़ना, खिलौनों से बच्चों के साथ खेलना।



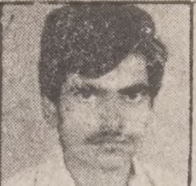
हरीश कुमार 'अमित' छाबड़ा क्लाथ हाउस, रोड़ी बाजार सिरसा, २० वर्ष, लिखना, दूर-दूर तक घूमना, अच्छी शिक्षा प्राप्त करना।



मो० सलाम भगवान, अ० रहमान भगवान, मुजान गढ़, १७ वर्ष, घूमना, खेलना, नदी में तैरना, दूसरों की सहायता करना।



राजीव कथूरिया, ३/८, अलोपी बाग पंजाबी कालोनी, इलाहाबाद, १६ वर्ष, फिल्में देखना, रेडियो सुनना तथा हीरो बनना।



श्री गोपाल खत्री, पन्ना लाल जी खत्री, भीनासर, बीकानेर १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, अंग्रेजी पढ़ना, टेलीविजन पर पिक्चर देखना।

# दीवाना फ्रैंड्स क़्लब

**दीवाना फ्रैंड्स क्लब** के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

# साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

६ जुलाई से १२ जुलाई ७८ तक

**मेष** : यह सप्ताह शुभ अशुभ मिश्रितफलों से युक्त रहेगा, अच्छी बुरी दोनों तरह की घटनाएं होती रहेंगी, व्यापार की स्थिति सुधरेगी, लाभ भी ठीक समय पर होता रहेगा, कोई विशेष समाचार भी मिलेगा।

**वृष** : देर से अधूरा पड़ा काम पुनः चल पड़ेगा, और किसी विशेष उलझन से छुटकारा मिल जावेगा, यात्रा भी सफल रहेगी, सरकारी कामों में सफलता परन्तु व्यय कमरतोड़ होगा।

**मिथुन** : काफी देर बाद अच्छे समय का प्रारम्भ हो रहा है, भाग्य साथ देगा, लाभ अच्छा होने लगेगा, लेकिन आपको संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, धर्म पर विश्वास बढ़ेगा, यात्रा में सुख मिलेगा।

**कर्क** : सोमवार सायं तक अफसरों से बिगाड़, यात्रा छोड़ दें, झगड़े से बचें। अन्य दिनों में भी आपको धन प्राप्त करने के लिये काफी संघर्ष करना पड़ेगा, व्यय पहले समान ही करना होगा।

**सिंह** : यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, कोई अप्रिय समाचार मिलेगा या कोई दुर्घटना भी हो सकती है, मित्र सहयोग देते रहेंगे, यात्रा भी अचानक ही होगी, व्यापार में सुधार होगा।

**कन्या** : इन दिनों हालात प्रायः पहले समान ही चलेंगे, कामकाज में रुचि बढ़ेगी और लाभ पहले समान ही होता रहेगा. परिश्रम से काम करने पर भाग्य साथ देगा. यात्रा सफल रहेगी।

**तुलाः** इस सप्ताह के दौरान आप कई तरह के सुधार होते महसूस करेंगे, किसी महापुरुष से मिलाप, आर्थिक स्थिति पहले समान ही रहेगी, धर्म में रुचि बढ़ेगी, संघर्ष भी काफी करना होगा।

**वृश्चिक** : सोमवार सायं तक व्यय अधिक अशान्ति बिना कारण ही होगी। अन्य दिनों में संघर्ष तो काफी रहेगा परन्तु लाभ भी अच्छा होगा और ठीक समय पर मिलता रहेगा।

**धनु** : सोमवार सायं से बुधवार रात्रि तक व्यर्थ की दौड़धूप रहेगी, क्रोध बढ़ेगा, कुसंगति से बचें। अन्य दिनों में परिश्रम सफल रहेगा. कोई विशेष काम पूरा हो जायेगा, व्यापार में यथार्थ लाभ होगा।

**मकर** : दिलचस्प होने पर भी यह सप्ताह संघर्षमय ही रहेगा, स्वास्थ्य में बिगाड़ अचानक ही पड़ेगा, यात्रा भी इन दिनों सावधानी से करें, परिश्रम अधिक और व्यर्थ का भी रहेगा।

**कुम्भ** : इन दिनों हालात आपके नियंत्रण अधीन ही रहेंगे, कोई महत्वपूर्ण काम बन जावेगा, दौड़धूप भी काफी रहेगी, भाग्य साथ देगा और परिश्रम से काम करने पर सफलता मिलेगी।

**मीन** : व्यापार से यथार्थ लाभ, आय में वृद्धि परन्तु मिलेगी कुछ देरी से ही, विरोधी अधिक और बिना कारण ही बनते रहेंगे, झगड़े आदि से मन उदास रहेगा, सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है।



# परवीन बाबी

**विजय भारद्वाज**

परवीन बाबी फिल्म उद्योग में आने से पूर्व माडलिंग किया करती थीं। भारतीय व विदेशी रंग ढाइन में मिश्रण है। यह भारतीय माता व विदेशी (पश्चिमी) पिता की पुत्री है। विदेश में ही परवीन पढ़ लिख कर बड़ी हुई और वहीं से इन्होंने माडलिंग कार्य शुरू कर दिया। भारत वापस लौट कर इन्होंने यहाँ भी यही माडलिंग कार्य सम्भाल लिया।

परवीन बाबी ने फिल्म उद्योग में पदार्पण करते ही शीघ्र सफलता भी प्राप्त कर ली। डैनी और परवीन बाबी के चर्चों ने बम्बई नगरी में ही नहीं अपितु दूर दूर तक धूम मचा दी।

यह सुन्दर इकहरे बदन की आजाद विचारों वाली परवीन खुलेपन में विश्वास रखती हैं। बातचीत में बेबाक, बेझिझक 'बॉय फ्रेंड' बनाना उनकी आदतों में शामिल हैं। फिल्म 'दीवार' में एक चरित्रहीन लड़की का रोल जिस खूबसूरती से परवीन ने निभाया उसको दर्शक आज भी नहीं भुला सकते। फिल्म 'दीवार' अपने समय की श्रेष्ठ फिल्म रही और उसने पिछले सारे रिकार्ड तोड़ दिए। इस फिल्म से जहां लेखक सलीम

जावेद चमके वहीं अमिताभ बच्च
परवीन बाबी ने लोकप्रियता प्राप्त
परवीन मित्र बनाने और बदल
झिझकती नहीं है। डैनी के बाद प
कबीर बेदी को अपने साथी के रूप
लोगों ने तो यहां तक अफवाहें उ
दोनों विवाहित जीवन व्यतीत करने
लेकिन कुछ दिनों बाद कबीर बे
बात भी खत्म हो गई। और आज
फिर सफलता की सीढ़ी पर अग्रसर

अब इन्होंने अपनी जिन्दगी
ढंग कुछ बदल दिया है। यारी दोस्ती
कर दी है। अब यह स्टार से ज्यादा
निर्देशकों में रुचि लेने लगी हैं। आज
इनके पास कई फिल्में हैं और यह
सितारों में गिनी जाती हैं। यदि इ
पसन्द नहीं आता तो यह निर्माता
को साफ मना कर देती हैं। अरविन्द
फिल्म 'अतिथि' के लिए पहले परवी
को ही साइन करने लगे थे लेकिन
स्क्रिप्ट पढ़कर रोल अस्वीकार कर
बाद में वह रोल शबाना आजमी को
गया। मनमोहन देसाई और मनोज
की आने वाली फिल्मों में परवीन
देगी। इनकी प्रमुख फिल्म है 'सुहाग
का दर्शकों को बेचैनी से इन्तजार है

परवीन बाबी का शौक है
पहनना और